# दीआ-बाती

## कक्षा-६ के खातिर
## भोजपुरी पाठ्य पुस्तक

# दीआ-बाती

## कक्षा-६ के खातिर भोजपुरी पाठ्यपुस्तक

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, द्वारा विकसित) बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा मुद्रित

## दिशा बोध :

- **श्री राजेश भूषण,** निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना, बिहार, पटना
- **श्री हसन वारिस,** निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना-800006
- **डॉ0 कासिम खुर्शीद,** प्रभारी विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

## भोजपुरी पाठ्यपुस्तक विकास समिति

**समन्वयक** - **डॉ० सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता (वि० शि० से०) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना-800 006

**सदस्य** –

1. डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद', पूर्व प्राचार्य, +2 उच्च विद्यालय, अमनौर, सारण
2. श्री वैद्यनाथ विभाकर, मध्य विद्यालय, लहलादपुर, सारण
3. श्री संजय कुमार, प्राथमिक विद्यालय, लहेजी, धुमनगर, सीवान
4. सुश्री अंजु कुमारी, प्राथमिक विद्यालय, हरिहरपुर कला, सीवान

**समीक्षक** -

1. **डॉ० शिवचन्द्र प्रसाद सिंह,** व्याख्याता (हिन्दी विभाग), पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी
2. **डॉ० रविन्द्र शाहाबादी,** व्याख्याता, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

**अकादमिक सहयोग** –

श्री इम्तियाज आलम व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

# बात दीया-बाती के

मातृभाषा, माई आ मातृभूमि के समाने महत्वपूर्ण आ बन्दनीय बा। आदमी जब धरती पर आपन पैर राखेला त मातृभाषा का माध्यम से ही ऊ कुछ कहेला, सुनेला भा समझे ला। ओकरा कवनो आवश्यकता के पूर्त्तियों एकरे माध्यम से मँगला पर हो ला। चाहे कवनो भाषा में हम पढ़ी भा सुनी, पहिले मने-मने मातृभाषा में ओकर अनुवाद करीले तबहीं ऊ हमरा समझ में आवेला। गांधी जी मातृभाषा के उल्लेख करत कहले रहीं कि जबतक ऊ मातृभाषा गुजराती माध्यम से पढलीं तब तक जल्दी आ आसानी से उनका ज्ञानार्जन भइल। जब उच्च विद्यालय मे कुल्हि विषय अंगरेजी में पढ़े के पड़ल त काफी कठिनाई के सामना करे के पड़ल। ऊ साफ-साफ कहलें कि जवन इतिहास, भूगोल, गणित आदि के ज्ञान ऊ अंगरेजी माध्यम से चार वर्ष में प्राप्त कइनी ऊ गुजराती में एके वर्ष में प्राप्त कर लिहतीं।

एह से बचपने से मातृभाषा के पढाई-लिखाई जरूरी बा। एह पुस्तक में छात्रन के बौद्धिक आ भाषिक क्षमता तथा उनन्ह के रूचि के ध्यान में राख के पाठन के चयन कइल गइल बा। एह मे गद्य आ पद्य दूनो विद्या के लोक गाथा, जीवनी, निबन्ध, कहानी, (दूसर भाषा से अनुदित) यात्रावृतान्त, सांस्कृतिक पर्व त्योहार भक्ति पद देश बन्दना, बुझउअल, प्रकृति वर्णन, राष्ट्रीय भाव जगावे के सन्देश के स्थान दिहल गइल बा।

भोजपुरी के मानक स्वरूप उभर चुकल बा । हमनी कई गो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठकन में विचार-विमर्श के बाद तय कइनी कि ‘‘अब भोजपुरी बोली भर नइखे रह गइल । ई अब खाली गीत-गवनई के भाषा नइखे रह गइल । अब ई विचार आ शास्त्र के भाषा बन चुकल बिया । जल्दीए ई शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान आदि के भी भाषा बनी । अइसन स्थिति में एकरा खातिर देवनागरी लिपि के कवनों अक्षर, संयुक्ताक्षर भा मात्रा छोड़ल ठीक नइखे । एह से अभिव्यक्ति में कठिनाई होई ।

जवान चीज खातिर भोजपुरी में शब्द बा नि:संदेह ओकरा के अपनावे के चाही बाकिर हिंदी, अंग्रेजी आ आउर कवनों भाषा के शब्दन के भोजपुरियावे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे। एह से अराजकता पैदा हो जाई। जरूरत पड़ला पर दोसरा भाषा के शब्द बेहिचक अपनावे के चाहीं। एह से भोजपुरी समृद्ध होई। बंगला, मैथिली इहे कइले बा। एह से भोजपुरी के विकास होई। अंग्रेजी के समृद्धि के एगो बड़हन वजह इहो बा कि ऊ अपना जरूरत के मुताबिक कवनो भाषा के शब्दन के अपना लेवे ले। शुद्धितावादी दृष्टिकोण से हिंदी के बहुत नुकसान भइल बा। हमनी के खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के चाहीं। जब भोजपुरी के हर तरह के अभिव्यक्ति के माध्यम बनावे के बा, त मुख सुख, स्थानीय प्रयोग आदि के आग्रह से ऊपर उठे के होई। अंग्रेजी, हिंदी सहित सभ भषन के स्थानीय रूप बावे बाकिर ओह हिसाब से लिखल ना जाला। मौखिक भाषा आ लिखित भाषा में हमेशा अंतर रहेला।

चूँकि भाषा सामाजिक संपत्ति हवे, ई समाज में जनम लेले आ समाजे में विकसित होले। एह से समाज में आइल बदलाव के हिसाब से भोजपुरी के अपना के ढाले के पड़ी। एह घड़ी कई गो कारण से एक जगे से दोसर जगे के आवागछ, संपर्क बढ़ रहल बा। एकर प्रभाव भाषा पर भी पड़ रहल बा।

भाषा में बदलाव होत रहेला। एकरा के रोकल नईखे जा सकत। भोजपुरी में जवन बदलाव आ रहल बा ओकर स्वागत करे के चाहीं। हरेक भाषा के एगो ग्राम रूप (cocknex) आ एगो शिष्ट होला। भोजपुरी खाली गँवई लोग के भाषा नइखे रह गइल।''

गद्य विद्या में लोक कथा का रूप में सुशीला पांडेय के 'बाँट-बखरा' का माध्यम से वेइमानी ना करे के सन्देश दिहल गइल बा। गाँव में सद्भाव के प्रसार में पर्व -त्योहार के भूमिका 'गांव के त्योहार', आपसी सदभाव' में दर्शावल बा। 'सोनपुर मेला के सैर' जहवाँ यात्रा-वृतान्त बा उहँवे हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार रामवृक्ष बेनीपुरी के 'गोशाला, कहानी के अनुवाद आदमी में आदमीयत उत्पन्न करे के कोशिश के साथे गरीब अक्ल के जिनगी सामाजिक सद्भाव के प्रतीक बा।

पेड़-पौधा हमार जिनगी पर्यावरण से सम्बधित पाठ बा त भोजपुरी क्षेत्र के महान आदमी भारत के पहिल राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के प्रेरक जीवनी छात्र लोगन के प्रेरणा के स्रोत बनीं। एकरा संगे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के पहचान आ मुहावरा के ज्ञान करावें के भी प्रयास भइल बन।

पद्य विधा में भोजपुरी के जानल-मानल गीतकार अनिरूद्ध के 'जय-जय भारत देश' के देश बन्दना के रूप मे पहिल पाठ में स्थान दिहल गइल बा। नीति परक दोहा में कबीर के दोहा

आ लड़िकन के दिमागी कसरत द्वारा बुद्धि के विकास ला बुझउअल राखल गइल बा। प्रकृति वर्णन में डॉ० शांति जैन के 'बहार गीत गाई जा' में बसन्त के सरस वर्णन बा त साहिसिक भाव भरे वाला कविता के रूप सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'बढ़ल चल.........' चयनित बा। अन्त में राष्ट्रीय भाव जगावत सुप्रसिद्ध गीतकार भोलानाथ गहमरी के गीत 'देशवा के दिहलु बरदान मइआ भारती' प्रस्तुत कएल गइल बा।

पाठ का संगे-संगे रचनाकार के दिहल परिचय आ विषय के परिचय, पाठेत्तर वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न गइल बा। भाषा, तथ्य, चिन्तन का अलावे अभिव्यक्ति-शक्ति बढ़ावे के भी जोगार एह पुस्तक में बा।

देहात में कवनो लड़िका जब पढ़े-लिखे में कोताही करेला त माई कहेली तनि दीयो-बाती त जड़ा ले, माने तनिको त कुछ पढ़-लिख। यही से प्रारंभिक वर्ग के एह पाठ्य-पुस्तक के नाम **'दीया-बाती'** दिहल जा रहल बा। **'दीया-बाती'** उजाला के प्रतीक बा, रोशनी के प्रतीक बा। एकर निर्माणे भइल बा अंध कार दूर करेला। अज्ञानता के करिया कुच-कुच अन्हरिया दूर क के ज्ञान के दक-दक अँजोरिया छात्रन के भीतर भरे में एकरा सफलता मिली त मेहनत सुफल मानल जाई।

बाकिर एतना जरूर बा कि **'दीया-बाती'** के अंजोर पावेला छात्रन के श्रम के तेल जरावे के पड़ी। पुस्तक में यथा संभव चित्र देके एकरा के आकर्षक बनावे के एगो कोशिश कइल गइल बा। बाकिर एकरा के अउरी अच्छा आ उपयोगी बनावल जा सकेला, जेकरा ला अध्यापक आ अभिभावक लोगन से निहोरा बा, आपन सुझाव दी हमरा खुशी होखी ।

**डॉ० सुरेन्द्र कुमार**
**समन्वयक**
**पाठ्य पुस्तक विकास समिति**

# विषय-सूची


| अध्याय | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| **पद्य भाग** | | |
| 1. | बाँट-बखरा | 1-6 |
| 2. | गाँव के त्योहार : आपसी सद्भाव | 7-12 |
| 3. | सोनपुर मेला के सैर | 13-17 |
| 4. | गोशाला | 18-24 |
| 5. | पेड़-पौधा : हमार जिनगी | 25-29 |
| 6. | देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद | 30-35 |
| **गद्य भाग** | | |
| 1. | जय-जय भारत देश | 36-41 |
| 2. | कबीर के दोहा | 42-45 |
| 3. | भोजपुरी बुझउअल | 46-48 |
| 4. | बहार गीत गाईं जा | 49-52 |
| 5. | बढ़त चलऽ | 53-56 |
| 6. | देशवा के दिहलु वरदान | 57-60 |
| **भोजपुरी व्याकरण** | | 61-74 |
| **पढ़ऽ-गुणऽ** | | 72-85 |
| **शब्द कोश** | | 86-88 |

# गद्य भाग

पाठ-एक

# अनिरूद्ध

*अनिरूद्ध जी के जनम 9 मार्च 1928 के डीहीं मकेर (सारन) में भइल। इहां का बुनियादी विद्यालय में शिक्षक रहीं। गांव के जिनगी का बारे में इहां का अपना गीतन में सुन्दर चित्रण कइले बानी। भोजपुरी के वुफछ गिनल-चुनल गीतकारन में अनिरूद्ध जी के प्रमुख स्थान बा। 'पनिहारिन' नाम से इनकर गीतन के एगो संग्रह प्रकाशित बा।*

*अनिरूद्ध जी 'जय-जय भारत देश' कविता में देश के बन्दना करत भारत के प्राकृतिक परिवेश के सुन्दर चित्रण कइले बाड़े। एकरा माटी के महत्व बतावत एकर जय-गान कइले बाड़ें। इ देश ज्ञानी, वीर, बलिदानी लोगन के देश बा। एह से आगे बढ़े के संदेश अपना कविता का माध्यम से कवि देत बाड़न।*

# जय-जय भारत देश

—अनिरूद्ध

जय भारत के भुँइया जय हे,
जय-जय भारत मइया जय हे।

जय-जय भारत देश पेआरा
जय-जय भारत देश,

तीन ओर सागर घिरे घहरे, चुन्दरी नील किनारी लहरे,
मलय बयार प्रान-मन महके, गिरि भुँइ वन परदेश।

पेआरा जय-जय भारत देश।

नीलम जड़े छत्र नभ मंडल, कटि शोभे करधनी विंधाचल,
कनक तार हिम जड़े किरन मनि, चाँदी मुकुट नगेस।

पेआरा जय-जय भारत देश।

चरन पखारत रँग सिन्धु जल, लहर-लहर झनके पग पायल,
पूरब-पच्छिम चम-चम चमके, फहर-फहर हिम केस,

पेआरा जय-जय भारत देश।

बन खेती के धानी अँचरा, उर नदियन के लहरे गजरा,
झरना हिया झरे दुधवा, छवि निरखत मिटे कलेस,

पेआरा जय–जय भारत देश।

प्रान निछावर बा तन–मन–धन, देश महान दिया जग दरपन,

जग सुन्दरी नग जड़ल देश बा, नमन कोटि हरमेस,

पेआरा जय–जय भारत देश।

जनम जहाँ भगवान गेआनी, जनमे भट नामी बलिदानी,

झुके शीश ना रूके चरन पथ, कहे पवन सन्देस,

पेआरा जय–जय भारत देश।

फसल–फूल मुसुकान मनोहर, कन–कन कनक रतन मनि मोहर,

जनम सफल अइसन भुँइया पर, दरपन भारत भेस,

पेआरा जय–जय भारत देश।

श्याम बरन माओ मुसुकाए, कर चन्न जिनगी तर जाए,

सूरज के टीका लिलार पर, चमके केस, विदेश

पेआरा जय–जय भारत देश।

नेआरा जय–जय भारत देश।

# अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. जय-जय भारत देश के कवि के बा ?

   (क) कैलाश गौतम    (ख) स्वर्ण किरण

   (ग) अनिरूद्ध    (घ) पांडेय कपिल

2. भारत देश के तीन ओर का बा ?

   (क) नदी    (ख) सागर

   (ग) पर्वत    (घ) जंगल

3. कटि शोभे करधनी में 'करधनी' केकरा के कहल जइल बा ?

   (क) हिमालय    (ख) आकाश

   (ग) गंगा    (घ) विंधाचल

4. भारत के छवि देख का मिट जाला ?

   (क) खुशी    (ख) मोह

   (ग) कलेस    (घ) एह में से कोई ना

5. 'जय-जय भारत देश' कवन तरह के कविता बा ?

   (क) राष्ट्रवन्दना    (ख) प्रकृति वर्णन

   (ग) सामाजिक चित्रण    (घ) वर्षा गीत

**2. नीचे लिखल पंक्तियन के पूरा करीं।**

1. पूरब-पश्चिम चम-चम चमके, ........................................................ ।
2. झुके-शीश ना रूके चरन पथ, ........................................................ ।
3. कनक तार हिम जड़े किरन मनि, .................................................... ।

**3. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

1. कवि एह 'जय-जय भारत देश' कविता में का निछावर करेके कह रहल बा ?
2. 'जय-जय भारत देश' कविता में पवन कवन संदेश दे रहल बा ?

**4. दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–**

1. 'जय-जय भारत देश' के भावार्थ लिखीं।
2. 'जय-जय भारत देश' कविता से हमनी के का सीख मिलत बा ? अपना शब्दन में लिखीं।

**5. नीचे लिखल शब्दन में से विशेषण चुन के लिखीं :–**

धानी अंचरा, नील किनारी, पेआरा देश, महान देश, कनक तार।

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| भुँइया | = | घरती, माटी |
| गिरि | = | पहाड़ |
| नभ | = | असमान |
| कटि | = | कमर |
| छत्र | = | छाता |
| गजरा | = | फूल के गुंथल माला |
| दरपन | = | अएना |
| शीश | = | सिर |
| मनोहर | = | सुन्दर |
| टीका | = | चन्नन |

| | | |
|---|---|---|
| मनि | = | एक प्रकार के कीमती चीज लाल |
| हिया | = | हृदय |
| भट | = | वीर |
| झरना | = | प्राकृतिक रूप से झड़त पानी |
| मुन्दरी | = | प्यारा |

# परियोजना कार्य

1. 'जय-जय भारत देश' जइसन कवनो दोसर कविता होखी त ओकर कुछ पंक्ति लिखीं।

# पाठ-दू

## सुशीला पांडेय

**'बाँट-बखरा'** लोककथा सुशीला पांडेय के लोक कथा संग्रह **'वेलबन्ती रानी'** से लिहल गइल बा। एह कथा में एगो बात के सन्देश मिलता कि बेईमानी ढेर दिन ना चले ला।

# बाँट-बखरा

एगो गांव में दू गो भाई रहन स । बड़का बहुत बदमास आ धूर्त रहे । छोटका बहुत सीधा रहे।

जब दूनो भाई अलगा भइलन स त बड़का सब चीज के बाँट-बखरा लगवलस। कहलस कि ''गाय के मुँह तोहार रही, पीछा के धड़ हमार रही। कम्मर दिन में तोहार रही, रात में हमार रही। गाछ के जड़ तोहार रही, डाढ़-पात आ पुलुई हमार रही। खेत में जोतल-बोअल तोहार रही आ फसल के जड़ तोहार रही, ओकर पुलुई आ फरल अनाज हमार रही,''

बेचारा छोटका सब बात मान गइल। भर दिन गाय के खियावे-पियावे; दूध दूह के बड़का लेके चल जाय। छोटका भर दिन कम्मर अपना घर में रखे, रात में बड़का लेके चल जाय, आ छोटका बेचारा जाड़ में छटपटा के रह जाय। छोटका गाँछ के जड़ में पानी डालल करे, बाकिर जब फर लागे त बड़का तूड़ लेव। छोटका भर दिन हर चलावे आ अन्न उपजावे, बाकिर जब फसल पाक के तैयार होखे त सब बाल बड़का काट लेवे, छोटका के खाली डंठल मिले। छोटका के मेहरारू बेचारी कुटिया-पिसिया क के केहूँ ग आपन गुजर चलावे। छोटका बेचारा हरमेसे दिकदारी में परल रहत रहे, आ बड़का मजा मारत रहे।

गांव के लोग ई सब तमाशा देखत-देखत अनसा गइल। सोंचल लोग कि छोटका बेचारा एतना सीधा बा कि बड़का ओकर जान लेवे पर तइयार बा, बाकिर तेहूपर छोटका बेचारा कुछ नइखे पावत।

त एक दिन गांव के लोग छोटका के बोला के कहल कि ''तोहार बड़का भाई तोहरा से बैमानी करत बाड़न।'' छोटका कहलस कि '' का करीं। हमरा त कुछ बुझाते नइखे।'' त गांव के लोग कहल कि '' जब ऊ गाय के दूहे लागस त तू जाके गाय के मुँह में मारे लगिह। जब कम्मर दिन में तोहरा मिले तब तू ओकरा के पानी में डूबा के ध दीह। जब गाछ में फर लागे शुरू होखे, तूँ गाछ के जड़ काटे लगिह। जब खेत में फसल लागे के शुरू होखे आ फसल में बाल धरे के शुरू होखे तसहीं तूँ फसल के जड़ काटे लगिह।''

बस छोटका के अकिल खुलल। ऊ ओसहीं कइलस । जब गाय दुहाए लागल त छोटका जा के गाय के मुँह में मारे लागल। बस गाय सब दूध गिरा देलस। त बड़का भाई बड़ा जोर खिसिआइल। त छोटका कहलस कि ''गाय के मुँह हमरा हिस्सा में बा। हम मारी, चाहे पुचकारी। तोहार का ?''

राती खा जब बड़का कम्मर लेबे गइल त देखलस कि कम्मर त भींजल बा। त छोटका कहलस कि'' दिन में कम्मर हमार ह, ओह घड़ी हम जे चाहीं से करब। मन करी त पानी में डालब, मन करी त ओढ़ब ? तोहार का ? रात में त देइए देली।''

जब गाछ में फर लागे के शुरू भइल त छोटका ओकर जड़ काटे लागल। ई देख के बड़का फेर बड़ी जोर से खिसिआइल। त छोटका कहलस कि ''जड़ त हमार ह, काटीं चाहे राखीं? तोहार का ?

खेत में फसल लागल आ बाल धरे के शुरू भइल, त छोटका कच्चे में फसल के जड़ काटे लागल। ई देख क बड़का फेर बड़ी जोर खिसिआइल। त छोटका कहलस कि ''डाँठ हमार ह। हम कबो काटीं पकला में काटीं, चाहे कच्चे में काटीं, तोहार का ?''

तब बड़का के दिमाग ठंढा भइल। ऊ सोचलस कि अब बैमानी ढेर दिन ना चल सकी। तब ऊ सब चीज के ठीक-ठीक बाँट-बखरा आधा-आधा लगा देलस। अब दूनू भाई खुशी से रहे लागल लोग।

# अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. बड़का भाई कइसन रहे?

(क) सीधा–सादा (ख) दुखी

(ग) धूर्त (घ) ईमानदार

2. बाँट–बखरा में गाय के शरीर के कवन भाग बड़का मंगलस?

(क) मुँह (ख) पीछा के धड़

(ग) टाँग (घ) सिंघ

3. कम्मर रात में केकरा हिस्सा में राखल तय भइल?

(क) बड़का के (ख) छोटका के

(ग) दूनु के (घ) दुनों में से केहू के ना

4. गाय के कवन खियावे–पियावे?

(क) छोटका भाई (ख) बड़का भाई

(ग) दूनो मिल के (घ) केहु आउर

5. फसल तैयार भइला पर के काट लेवे?

(क) गाँव के लोग (ख) छोटका भाई

(ग) चोर (घ) बड़का भाई

6. **खाली जगहा में उपयुक्त शब्द भरीं :–**

(क) गाँव के लोग तमाशा देखत–देखत ............ गइल।

(ख) छोटका के मेहरारू ........ ........ क के केहूँ ग आपन गुजर चलावे

(ग) गांव के कहला पर छोटका के .......... खुलल।

(घ) जब फसल में बाल धरे के शुरू होखे तसहीं तू फसल के ............... काटे लगिह।

(ङ) जब गाय के दूध दूहे लागस त तू जा के गाय के .............................मे मारे लगिह।

**लघु उत्तरीय :–**

7. बड़का के दिमाग कइसे ठंढा भइल?
8. दिमाग ठंढइला पर बड़का का सोंचलस ?
9. बड़का के चलाकी जनला के बाद छोटका दिन में कम्मर के का करे?
10. 'बाँट-बखरा' कहानी से कवन शिक्षा मिले ला?

**दीर्घ उत्तरीय :**

10. बाँट- बखरा कहानी में बड़का के धूर्तयी-बेईमानी के वर्णन करीं।
11. 'बाँट-बखरा? में दुनों भाई आखिर में कइसे खुशी से रहे लागल
12. रह पाठ में से पांचगो संज्ञा चुनीं

    जइसे - गाय, गाँछ,

13. संज्ञा भा सर्वनाम के जवन शब्द विशेषता बतावेला ओकरा विशेषण कहल जाला।

    जइसे– करिया गाय घास चरत रहे में <u>करिया</u> विशेषण बा।

    **नीचे के वाक्य में विशेषण चुन के लिखऽ–**

    (क) बेचारा छोटका सब बात मान गइल।

    (ख) बड़का भाई तोहरा से बैमानी करत बाड़न।

    (ग) फरल अनाज हमार रही।

    (घ) देखलस कि कम्मर त भींजल बा।

    (ङ) छोटका कच्चे फसल के जड़ काटे लागल।

**शब्द भंडार**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | धूर्त्त | = | चालाक |
| 2. | पुलुई | = | पुआल, डंठल |
| 3. | कुटिया | = | पिसिया-अनाज के कूटल-पीसन |
| 4. | दिकदारी | = | कठिनाई |
| 5. | अनसा गइल | = | उब गइल |
| 6. | डाँठ | = | फसल के डंठल |
| 7. | खुलल | = | बुद्धि आइल |
| 8. | दिमाग ठंढा भइल | = | नरम पड़ल |
| 9. | कम्मर | = | कबंल |

## पाठ-तीन

# कबीर दास

कबीर दास एगो महान संत कवि रहलें। इनकर जन्म काशी में भइल रहे। इनकर पालन-पोषण एगो साधारण जुलाहा परिवार का घरे भइल रहे। कबीर दास जी समाज में पफइलल कुरीतियन, ढोंग, आडम्बर के घोर विरोधी रहलें, धर्म के नाम पर ढोंग पर इहां का जोरदार प्रहार कइले बानीं। कबीर के भोजपुरी के आदि कवि मानल जाला ।

एह पाठ में संकलित कुल्हि दोहा नीति से सम्बन्धित बा। एक ओर उहाँ के सांच के महत्ता बतावत बानी त दूसर ओर पत्थर के मूर्त्ति पूजन आ चिल्ला के अजान के ढोंग पर प्रहार करती बानीं। गुरू आ प्रेम के महत्ता, मन में शुद्धिकरण, धार्मिक कट्टरपन के विरोध इनका दोहा में मूल स्वर बन के उभरत बा।

# दोहा

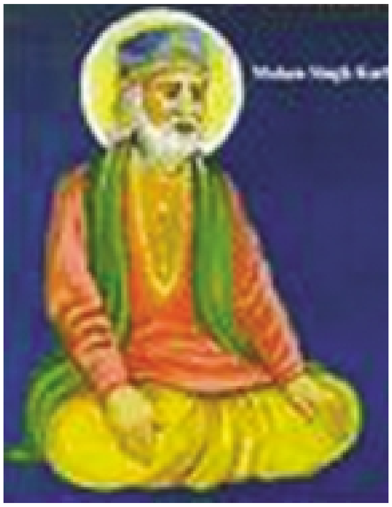

सांच बराबर तप नाहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै सांच है, ताके हिरदै आप॥

पाहन पूज हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़।
ताते चक्की है भली, जो पिस खाये संसार॥

कांकर, पाथर चुनि-चुनि, मस्जिद लियो बनाये।
तापर चढ़ि मुल्ला वांग देवे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥

साईं इतना दीजै, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय॥

**गुरू गोबिन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाय।**
**कहत कवीर गुरू आपनो, जिन गोबिन्द दिया बताय॥**

**पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।**
**ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े से पंडित होय॥**

**माला फेरत युग गया, फिरा न मन का फेर।**
**कर का मनका छाड़ि के, मनका मनका फेर॥**

## अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-**

1. 'सांच बराबर तप नाही, झूठ बराबर पाप' के कहले बा ?
2. गुरू आ गोबिन्द दुनो खड़ा बाड़ें, पहिले केकरा पांव लागे के चाहीं ?

   (क) गोविन्द के — (ख) गुरू के

   (ग) दूनो के साथे — (घ) केहु के ना
3. कबीर दास कवना माला के फेरे के कहले बाड़े ?

   (क) हाथ के माला — (ख) फूल के माला

   (ग) मन के माला — (घ) एह में से कवनो के ना
4. 'ढ़ाई अक्षर' प्रेम के पढ़ला से का होला ?
5. भगवान केकरा ह्दय में बसे लन ?

**2. लघुउत्तरीय प्रश्न :-**

1. **'पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़'** में कबीर कवना चीज के विरोध करत बाड़न ?
2. सबसे बड़ तपस्या आ सबसे बड़ पाप कबीर केकरा बतवले बाड़न ?

**2. नीचे लिखल पंक्तियन के पूरा करीं।**

1. पाहन पूजे हरि मिले, ........................................................ ।
2. पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, ........................................................ ।
3. माला फेरत युग गया, ..................................................... ।

**4. दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–**

1. कबीर के कवनो तीन दोहा के भावार्थ लिखीं।
2. कबीर हिन्दू-मुस्लमान दूनो के ढ़ोंग पर प्रहार कइले बाड़ें। कइसे ?

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| तप | = | तपस्या |
| सांच | = | सच |
| पाहन | = | पत्थर |
| साईं | = | भगवान |
| कुटुम्ब | = | परिवार |
| पोथी | = | किताब |
| आखर | = | अक्षर |
| पाय | = | पांव |
| मुल्ला | = | मुसलमानों के धर्म गुरु |
| वांग देना | = | अजान देना |

## पाठ-चार

*इ रचना पाठ्य पुस्क विकास समिति द्वारा तैयार कइल गइल बा। इ पाठ सामाजिक सद्भाव में पर्व-त्योहार के योगदान पर आधारित बा। एह में दशहारा आ मुहर्रम दू गो अलग-अलग धर्म माने वाला के पर्व में समन्वय देखावल गइल बा। एकरा अलावे होली, दीवाली आदि कए गो अइसन पर्व बा जवना में दूनों सम्प्रदाय के लोग मिल-जुल के भाग लेवे ला। त्योहारन के आयोजन आपस में एकता आ सद्भाव लावेला इहे संदेश मिल रहल बा एह पाठ से।*

# गाँव के त्योहारः आपसी सद्भाव

मनीष पहिले-पहिल आपना गांवे आइल रहे। गाँव के पोखरा, मन्दिर-मस्जिद, नदी आ बाग-बगइचा देख के उ खुशी से झूम उठल। ओकर जनम-करम दिल्ली में भइल रहे। उँहवे ओकर बाबूजी एगो स्कूल में शिक्षक रहलें। ओकर गाँव एगो ठेठ भोजपुरिया गाँव ह। नौकरी से अवकाश ग्रहण कइला पर माई-बाबू का संगे उ गाँव पर घरे आइल। जवना समय उ घरे आइल रह उ आसिन के महीना रहे। गांव में दशहारा के मेला देखलस। दशहारा त उ दिल्लीओ भी देखले रहे बाकिर इहां के पूजा-पाठ के एगो अलगा ढंग रहे। इहां के मेला के एगो अलगे रंग रहे। दशहारा के कहानी उ जानत रहे। उ जानत रहे कि महिषासुर राक्षस के बध करेला दुर्गा माई अवतार लेले रहीं। उनका सब देवता लोग आपन-आपन हथियार दिहले रहे। कहल जाला कि

दुर्गा पूजा

रावण पर विजय प्राप्त करेला रामचन्द्र जी भी नव दिन तक दुर्गा जी के पूजा कइले रहलें। मेला में सब जाति-धर्म के लोगन क नाच-गाना के खूब मजा उठावत देखलस।

ईद

संयोग अइसन रहे कि ओही समय में इस्लाम धर्म माने वाला मुसलमान लोगन के मुहर्रमों पर्व आ गइल। लइकन सभे गंडा पेन्ह के डंडा-गदका भांजत रहे। इ देख के उहो खुशी में कूदे लागल। बड़ लोग तलवार आ फरसा भाँजल रहलें उ देखलस कि एह पर्व में हिन्दू-मुसलमान दुनो भाग लेत रहस। दुनो संगे-संगे मुहर्रम मना रहल बा। मुहर्रम वास्तव में मातम के पर्व बा। कहल जा ला कि पैगम्बर साहब के बेटा ना रहे।

उनका मुअला पर उत्तराधिकारी बने के सवाल उठल। उनका एगो बेटी रहे फातिमा।

दीवाली

फातिमा के बिआह पैगम्बर साहेब के चचेरा भाई अली से भइल । अली मार दिहल गइल। उनकर दूसर बेटा हुसैन के करबला के मैदान में दबोच के मार दिहल गइल। एह अवसर पर ताजिया उन्हन के कब्र के प्रतीक का रूप में निकालल जाला। मुसलमान लोग एह अवसर पर मातम मनावे ला आ झरनी बजा के मर्सिया गावे ला।

कुछुए दिन गइल दीवाली आ छठ आइल। दीवाली त उ देखले रहे बाकिर छठ देखे के ओकरा मौका ना मिलल रहे। उ देखलस सांझ खानि सभे अपना माथा पर दउरा राख के बड़का पोखरा जा रहल बा। उहो माई आ बाबू का संगे उहँवा गइल। सुरूज डूबे का बेरा उहां कलसुप में ठेकुआ (गुड़, आटा या घीउ के एगो पकवान) केला, नरियर, नींबू आ आउरी फल–फूल से सभे परबइतिन पियरी पहिन के सुरूज देवता के आंख मुंदि के देख रहल बारी सन। लोग ओह पर दूध ढार रहल बा। रात खानि अपना पड़ोसी का घरे एगो अजब सुन्दर दृश्य देखलस। ऊँख के पांच गो पेड़ के पीयर कपड़ा से बाँध के खड़ा कइके ओकरा नीचे घइला पर घइला राखल रहे। चारों ओर कलसुप सजल छितरावल रहे। सब पर दीया जरत रहे। परबइतिन का साथे आउरी मेहरारू लोग गीत गावत रहे –

छठ

**उ जे केरवा जे फरल घवद से, ओपर सुग्गा मेड़राए।**

**उ जे सुगवा के मारवो धनुष से, सुग्गा गिरीहें मुरूछाए।**

एगो गीत खतम भइल त खूब रेघा के दोसर गीत गावे लगली सन –

**उ जे कांचहि बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाय**

रात बीत गइल। होत भिनुसार सभे फेर ओहि घाट पर गइल आ उगत सुरूज के ओईसहीं पूजा कइली सन । एकरा के अरघ दिहल कहल गाला।

घाट पर दोसरका दिन सभे प्रसाद पावे ला। हिन्दू लोगन में इ सबसे पवित्र पर्व मानल जाला। बड़ा नेम–टेम से इ पर्व, इ व्रत कइल जाला।

सांच पूछल जाव त गाँव में जवन त्योहार मनावल जाला ओह में खाली धार्मिके भावना ना रहेला। पर्व–त्योहार का माध्यम से ओकरा मनावे के क्रम में आपसी सद्भाव बढ़ेला । गाँव में देखल जाला सुभान खाँ आ जगन्नाथ पंडित संगे होली खेले लेंन । सामू सिंह आ ताहिर मियां मुर्हरम के गदका संगे–संगे भांजे लन । दीवाली हो भा सबे-बारात (सोबरात), क्रिसमस हो भा होली कुल्हि त्योहार प्रेम आ एकता के प्रतीक होला।

## अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. गाँव देख के मनीष का भइल ?

   (क) मन उदास हो गइल (ख) दिल्ली लवटे के मन करे लागल

   (ग) मन खुशी से झूम उठल (घ) दिल्ली के इयाद आवे लागल

2. गांव अइला पर मनीष कवन पर्व देखलस जे दिल्लिओ में देखले रहे ?

   (क) होली (ख) दशहारा

   (ग) दीवाली (घ) छठ

3. महिषा सुर के बध करे खातिर दुर्गा माई के देवता लोग आपन का देले रहे?

   (क) आशीर्वाद (ख) हिम्मत

   (ग) हथियार (घ) बल

4. रावण पर विजय प्राप्त करेला रामचन्द्रजी कए दिन दुर्गाजी के पूजा कइले रहलन?

   (क) पांच (ख) छः

   (ग) सात (घ) नव

5. **खाली जगहा भरीं :–**

(क) पैगम्बर साहब के बेटी के नाम .......... रहे।

(ख) लइकन सभे गंडा पेन्ह के ................ भांजत रहे।

(ग) .................. के करबला के मैदान में दबोच के मार दिहल गइल।

(घ) मुसलमान लोग मुहर्रम का मौका पर .................. मनावेला।

**लघु उत्तरीय प्रश्न :–**

6. मुहर्रम वास्तव में कइसन पर्व बा?

7. ताजिया कवना चीज के प्रतीक बा?

8. गांव में त्योहार मनवला से का–का हो ला ?

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–**

9. छठ पर्व के वर्णन करीं।

10. त्योहार में सद्भाव आ एकता कइसे देखल जाला?

11. पाठ से पांच गो व्यक्ति वाचक संज्ञा चुन के लिखीं

जइसे - मनीष, रावण

12. मन्दिर–मस्जिद, बाग–बगइचा जइसन पांच गो युग्म शब्द पाठ से चुन के लिखीं।

# परियोजना कार्य

अपना मन से कवनों एगो त्योहार के वर्णन करीं आ ओकर महत्व बताई।

**शब्द भंडार**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | गंडा | = | धागा के गांठ आ चमकी लागल माला जइसन चीज |
| 2. | गदका | = | एगो अस्त्र वा जवना में डंटा में दूना ओर गोला लागल रहेला |
| 3. | फरसा | = | एगो हथियार |
| 4. | उत्तराधिकारी | = | केन्हू के मुअला पर ओकरा धन आदि के अधिकारी |
| 5. | कोलसुप | = | बांस के बनल एगो चीज जवना से अनाज फटकारल जाला। |
| 6. | परबइतिन | = | पर्व करे वाली औरत |
| 7. | बहंगी | = | बांस भा सीक के मजबूत फट्ठा के दुनो ओर रस्सी के सामान राखे वाला बनावल चीज जे कंधा पर सामान ढोए के काम आवेला। |
| 8. | सद्भाव | = | अच्छा भाव, |
| 9. | शबेबरात | = | इस्लाम धर्म के एगो पर्व |
| 10. | क्रिसमस | = | इसाई धर्म के एगो पर्व |

## पाठ-पांच

**–डॉ० शांति जैन**

*डॉ० शांति जैन के जनम 4 जुलाई 1946 में भइल रहे । इहां का हिन्दी, संस्कृत में पी–एच डी० का साथे संगीत में संगीत प्रभाकर के उपाधि भी इनका मिलल बा । पटना वीमेन्स कॉलेज आ मगध महिला कॉलेज में व्याख्याता पद पर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् में लोक भाषा विभाग में अनुसंधान सहायक का पद पर कार्य कइला का बाद आज-काल सहजानन्द ब्रह्मर्षि कॉलेज आरा में संस्कृत के व्याख्याता पद पर कार्यरत बानी । एक दर्जन किताब प्रकाशित बा*

***'बहार गीत गाईजा'*** *गीत में बसंत के सरस वर्णन का संगे-संगे उमंग आ शांति के संदेशों बा । इ इनकर भोजपुरी गीत संग्रह* ***'संझाघिरे लागल'*** *से लिहल गइल बा।*

# बहार गीत गाईं जा

**–डॉ० शांति जैन**

बसन्त के बिहान बा
बहार गीत गाईं जा ।

उदित भइल अरूण तपन
सोहा रहल कनक किरन
निखर उठल चमन चमन
बहार गीत गाईं जा ।।

कोइलिया भइल बा मगन
ई बाग आम के सघन
धरा पऽ झुक रहल गगन
बहार गीत गाईं जा।।

सुगन्ध दे रहल पवन
उमंग से बेहाल मन
उतार गीत में अमन
बहार गीत गाईं जा ।।

बसन्त के चपल चरन
बना रहल नया चमन
सँवर गइल सपन-सपन
बहार गीत गाईं जा ।।

## अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-**

1. (क) 'बहार गीत गाईं जा' के लेखक के बा ?
   (i) डॉ० मधु वर्मा (ii) डॉ शांति जैन
   (iii) मैनावती (iv) डॉ० ज्ञान्ति।

   (ख) कोइल कवन ऋतु में मगन रहेले ?
   (i) वंसत (ii) शरद
   (iii) पतझड़ (iv) गर्मी

   (ग) डॉ० शांति जैन कवन विषय में पी०एच०डी० कइनी ?
   (i) संस्कृत (ii) भोजपुरी
   (iii) अंग्रेजी (iv) सभे

(घ) बहार गीत गाई जा में कवन ऋतु के वर्णन भअल बा ?

(i) शरद (ii) शुष्क

(iii) बसंत (iv) कुल्हि

**2. नीचे लिखल खाली जगह के भरीं :–**

(क) निखर उठल चमन चमन

......................... जा।

(ख) सुगन्ध दे रहल पवन

..................... मन।

(ग) बसन्त के चपल चरन

बना ..................... ।

**3. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

(क) डॉ० शांति जैन बहार गीत गाई जा में कवन मौसम के वर्णन वा ?

(ख) मन कब उमंग से भर जाला ?

(ग) एह कविता से का सदेश मिलता ?

**4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–**

(क) 'बहार के गीत गाई जा' के भावार्थ का बा ?

(ख) बसंत ऋतु में कनक किरण काहे रूचिकर लागेला ?

**5. नीचे लिख शब्दन से वाक्य बनाईं :–**

बसंत

चमन

बाग

कोइल

सुगन्ध

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| बिहान | = | सवेरा, भिनसार |
| अमन | = | शांति |
| उदित | = | उगल |
| चपल | = | सुन्दर |
| अरूण | = | लाल |
| कनक | = | सोना |
| चमन | = | बागीचा, फुलवारी |
| धरा | = | पृथ्वी, धरती |
| पवन | = | हवा |

## पाठ-छः

**–जमादार भाई**

*जमादार भाई के जन्म सन् 1938 में सारण जिला के लहलादपुर गाँव में भइल रहे। भोजपुरी भारती के चर्चित संस्थापक,* ***'पपीहरा', टोटनाथ वाणी, चमन प्रहरी*** *आ* ***'भोजपुरी भारती पत्रिका'*** *के सह-संपादक रहीं। उहां के भोजपुरी में काव्य संग्रह* ***मोजर, अगरासन, साधना के स्वर,*** *भोजपुरी के चुनल राष्ट्रीय गीत प्रकाशित बाटे।*

*पाठ में सोनपुर मेला के धार्मिक, ऐतिहासिक, व्यावसायिक रूप के देखावल गइल बा। एह में गंडकी की के एह महिमावान माटी के आ विश्व प्रसिद्ध पशु मेला के वर्णन कइल बा।*

# सोनपुर मेला के सैर

**–जमादार भाई**

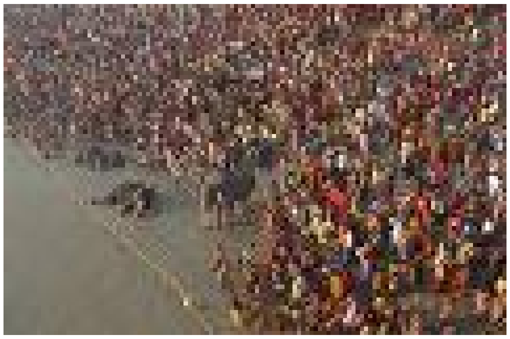

**हरिहर क्षेत्र का चित्र**

जब जनता बाजार से सोनपुर मेला जाये खातिर कोच पकड़नी, त मन गह–गह हो गइल। दिल दरिआव हो गइल। सोनपुर मेला के पहिले गेट के भव्यता देख के बुझा गइल कि अब सोनपुर मेला नियरा गइल बा। जंक्शन के पुरूब गंडक नदी के किनार पर मेला के विशाल स्वरूप लउके लागल। पशु–पक्षी के मेला, सरकारी प्रदर्शनी, साधुअन के जमात (नारायणी) आ बगल मे हरिहर महादेव के विशाल मन्दिर के संगही नदी किनारे गज–ग्राह के करिया मूर्ति देख के जियरा जुड़ा गइल। इ सब चीज देखला से बुझाइल कि कवनो इतिहास बोल रहल बा।

सोनपुर एगो ऐतिहासिक आ धार्मिक स्थल बाटे। पुराण में वर्णित गज–ग्राह के लड़ाई एहिजा भइल बा। गज के जब ग्राह पानी में खींच ले जात रहे त पीड़ा के एह समय में गज पुकारे लगले। भगवान विष्णु पैदल आके राज के से रक्षा कइनी। कोनहरा घाट में गंडकी के किनारे एकर मनभावन चित्र बाटे। कोनहारा, घाट से आगे बढ़ला पर एह पार हरिहर नाथ के विशाल मन्दिर बाटे। सारण जिला में सात नाथ के चर्चा बाटे। ओह में बाबा ढोढ़नाथ, धर्मनाथ, शिलानाथ, बाबा महेन्द्रनाथ के बाद हरिहरनाथ के चर्चा बाटे। हरिहर नाथ हरि+हर से बनल बाटे। हरि माने विष्णु आ हर माने शिव

होला। हरिहर के अर्थ भइल-विष्णु आ शिव के समन्वय। आजो ई शैव आ वैष्णव धर्म के संतुलित रूप ह। इहां कवनो धार्मिक उन्माद नइखे।। मिलन के प्रेम-धार बहल बा। अइसन ऐतिहासिक जगे पर सोनपुर मेला लागे ला।

कातिक के पुरनमासी के दिन विशाल मेला लागेला ई एशिया प्रसिद्ध मेला हवे। एहिजा विशाल पशु मेला लागेला। एह में भईंस, गाय, बैल, घोड़ा, बकरी आ हाथी के खरीद-बिक्री होला। एशिया के हर कोना से लोग मवेशी लावेलन। खूब खरीदाला, बिकाला। अब त हाथी के बेंचल नइखे जात बलुक दान के पद्धति अपना लिहल गइल बा। एहिजा बहुत बड़हन सरकारी प्रदर्शनी लागेला। एह में रेलवे विभाग, पुलिस विभाग, बैंक आउर दोसर विभागन के बड़हन प्रदर्शनी लागेला। रेलवे, कृषि, बैंक, ग्रामीण विकास विभाग, हस्त करघा आ जन सम्पर्क विभाग के प्रदर्शनी देख के मिजाज खुश हो गइल।

अब चलनी सन-चिड़िया बाजार देखे। उहां तरह-तरह के चिरई-चुरुंग आ कुत्ता देख के मन खुश हो गइल। ओही रास्ता में लकड़ी के विशाल दूकान लागल रहे। बाकिर बगल में गरम कपड़ा के दूकान, मौत के कुँआ, सर्कस के खेल देखे के मिलल। थोड़ही दूर पर साधु-संत लोग ठहरल रहे। उहां सब विभिन्न सम्प्रदाय के रहीं। बाकिर ओहिजा राष्ट्रीय एकता के भाव भरल रहे। सभे में कवनो मतभेद ना रहे। कातिक पुरनमासी के गंडकी में स्नान मन के पवित्र कर देला। सोनपुर के प्लैटफार्म एशिया में प्रसिद्ध बाटे। बाकिर इहां के थियेटरो बहुते प्रसिद्ध बाटे। पहिले इहां पारसी थियेटर कम्पनी आवत रहे। बाकिर ओकर स्थान अब थियेटर कम्पनी ले ले बिआ। इहां मनोरंजन आ संस्कृति के धार बहेला। सोनपुर मेला में बहुत कुछ देखे के मिलल। मन में एकर इयाद ढेर दिन ले रही।

सोनपुर मेला के सैर कर के साँझ होते घरे लवट चलनी। सोनपुर मेला के सैर बहुत कुछ सिखा गइल।

# अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-**

1. सोनपुर मेला कवना रूप में विश्व प्रसिद्ध बा ?
2. सोनपुर मेला कब से शुरू होला?
3. सोनपुर मेला में जवन मन्दिर बा ओकर का नाम बा?
4. सोनपुर मे कवना-कवना के बीच लड़ाई भइल रहे?
5. सोनपुर मेला कहँवा लागे ला?
6. **खाली स्थानन में उपयुक्त शब्द भरीं :–**

   (क) हरिहर क्षेत्र में गज आ .................... में युद्ध भइल रहे।

   (ख) गज का पुकार पर ................ पैदल ओकरा बचावे आइल रहल।

   (ग) हरिहर में शिव आ ................ के समन्वय बा।

   (घ) चिड़िया बाजार में तरह-तरह के ................ बेचाला।

   (ङ) सारण जिला में ............... गो नाथ के चर्चा बा।
7. **लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

   (क) हरिहर क्षेत्र के मंदिर का बगल में कवना चीज के जमात देखल जाला?

   (ख) मेला में जवन-जवन विभाग के प्रदर्शनी लागेला ओहे में कवनों तीन गो के नाम लिखीं?

   (ग) सोनपुर मेला में कवन-कवन चीज के धार बहेला ?
8. **दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–**

   (क) सोनपुर मेला के वर्णन अपना शब्दन में करीं।
9. **जवन संज्ञा से समूह के बोध होला उ 'समूहवाचक संज्ञा' कहाला।**

   **नीचे के वाक्यन में से समूहवाचक संज्ञा चुन के लिखऽ।**

   (क) अब सोनपुर मेला नियरा गइल बा।

   (ख) साधुअन के जमात मंदिर के बगल में रहेला।

(ग) लोग के भीड़ देख के मन घबड़ा जाला।

(घ) झुंड के झुंड मेहरारू मेला में आवेली।

(ङ) मंदिर के आगा भिखमंगन के जमघट मिलेला।

## परियोजना कार्य

सोनपुर मेला जइसन कबनों दोसर मेला आ ओकर महत्त्व के वर्णन करीं।

### शब्द भंडार

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | कोच | = | एक तरह के बस |
| 2 | नियरा | = | नजदीक |
| 3 | जंक्शन | = | रेलवे स्टेशन जहां कए दिशा से लाइन आके मिले ला। |
| 4 | विशाल | = | लमहर |
| 5 | प्रदर्शनी | = | जहवाँ कवनो चीज के दिखावल जाला प्रदर्शन कइल जाला। |
| 6 | प्रसिद्ध | = | नामी |

पाठ-सात

*भोजपुरी में लोक साहित्य के विशाल भंडार बा। लोक-साहित्य अपना अंचरा में कईगो रूप समेटले बा। लोकगीत-लोकनृत्य, लोक गाथा, मुहावरा, कहावत आ बुझउअल एकर रूप ह। बुझउअल लइका लोग के बीच बुझावल जाला। एह से गणितीय भाव से दिमाग बढ़ेला। जीव-जन्तु आ प्राकृतिक जिनगी के मनोरंजन भाव से आकार मिलेला। एहजा भोजपुरी बुझउअल के रूप में दिहल जा रहल बा। बुझउअल से सोंचे के शक्तिफ बढ़ेला आ मानिसिक विकास होला।*

*एकरा के पाठ्य पुस्तक खातिर आयोजित कार्यशाला में तइयार कइल बा।*

# भोजपुरी बुझउअल

1. बाप के नाँव से पुत के नाँव, नाती के नाँव कुछ और।
   ई बुझउअल बुझब तबहीं उठइह कौर। (महुआ)

2. सास पुतोह ननद भउजाई
   तीन रोटी में कइसे खाई।
   (सास के पतोहे ननद के भउजाई होला एह से कुल तीने आदमी बा)

3. गोला बरदा चारा खाय
पानी पिये मर जाय। (ओला)

4. राजा रानी सुने कहानी
एक घइला दुरंग पानी। (अंडा)

5. लाल गाय खर खाय
पानी पिये मर जाय। (आग)

6. एगो थरिया मोती भरल
सबका माथे अऊँधल पड़ल। (असमान आ तरेगन)

7. एक सन्दूक में बारह खाना
बारहों खाना में तीस-तीस दाना। (बरिस, महिना, दिन)

8. चार चिरइआ चार रंग, चारो बेदरंग
एक पिंजरा में डाल दिहनी चारो एकेरंग। (पान, कसैली, कत्था, चूना)

## अभ्यास

**1. खाली स्थानन के भरीं :–**

1. सास पुतोह .............................. कइसे खाई।
2. राजा रानी ............................... दू रंग पानी।
3. एगो थरिया ............................ अऊँधल पड़ल।
4. चार चिरइया ......................... चारो एके रंग।
5. एक सन्दूक में बारह खाना ........................... दाना।

**2. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

1. बुझउअल का ह एगो, उदाहरण दीं ?
2. गणितिय बुझउअल के एगो उदाहरण लिखीं ?
3. बुझउअल से कवना चीज के विकास होला ?
4. बुझउअल केकरा बीच बुझावल जाला ?

# परियोजना कार्य

1. अपना मन से कवनो बुझउअल लिखीं।

## पाठ–आठ

*देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के जीवन त्याग आ तपस्या के कहानी बा। इनकर छात्र-जीवन छात्रन खातिर प्रेरणा के स्रोत बा। इनकर सादगी आ ईमानदारी सभकर ला एगो आदर्श बा । इ पाठ छात्र लोगन के एगो प्रोत्साहन देवे वाला पाठ बा।*

*भोजपुरिया क्षेत्र के महापुरुष राजेन्द्र बाबू के जीवनी पाठ के तैयारी पाठ्य पुस्तक विकास समिति द्वारा कइल गइल बा।*

# देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

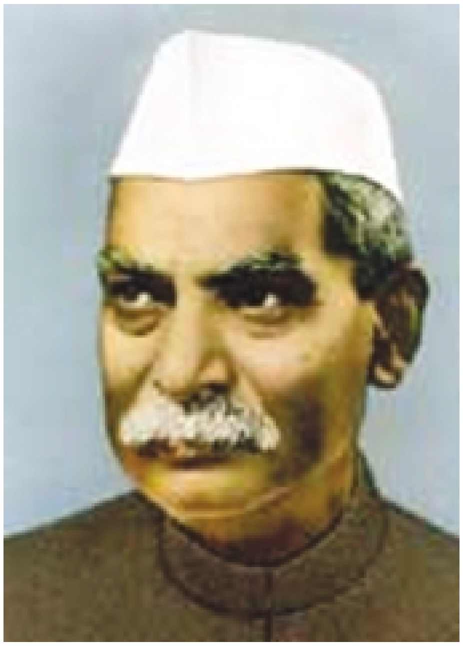

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' के साक्षात् प्रमाण भारत के पहिला राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बचपने से प्रतिभा के धनी रहीं। छात्र–जीवन में इनका परीक्षा के उत्तर पुस्तिका देख के परीक्षक अकचका गइलें। उहां का ओह पर लिखनी कि परीक्षार्थी परीक्षक से अधिका योग्य बा। अइसन कुशाग्र बुद्धि वाला व्यक्ति के जनम बिहार राज्य के सारन जिला (आज के सीवान जिला) में 3 दिसम्बर 1884 के भइल रहे। इहां के पिता स्व० महादेव प्रसाद उर्दू–फारसी के विद्वान रहीं। इहां के माई धार्मिक स्वभाव के रहीं। राजेन्द्र बाबू के बचपन में सूते के पहिले इनकर माई इहां के रामायण आ महाभारत सुनावत रहीं। इनका बाल मन पर माई के संस्कार के खूब प्रभाव पड़ल।

राजेन्द्र बाबू के शिक्षा पांच–छव बरिस के उमर में शुरू भइल। घरे पर इनका पढावे ला एगो मौलबी साहब के राखल गइल। उर्दू–फारसी से पढ़ाई शुरू भइल। बाकिर असली पढ़ाई के श्रीगणेश छपरा में भइल जहँवा इहां के हिन्दी – अंगरेजी के पढ़ाई शुरू कइनी। छपरा जिला स्कूल से बाद में पटना चल गइनी उहँवें से इन्ट्रेस के परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइनी। एतने ना इहां का बिहार बंगाल आ उड़ीसा तीनों प्रान्त के कुल्हि लड़िकन में प्रथम स्थान पवनी। आगे कॉलेजो में पढ़त बेर इहां का हमेशा प्रथम स्थान पावत रहनी। उहां के स्मरण शक्ति बेजोड़ रहे। छात्र–जीवन से ही इहां में देश–प्रेम के भावना कूट–कूट के भरल रहे। आपन व्यक्तिगत जीवन आ पारिवारिक बन्धन से अधिका देश के प्रति आपन कर्त्तव्य के अधिका महत्व देत रहीं। गांधीजी जब चम्पारण में नील के खेती करे वाला किसानन के आन्दोलन का सिलसिला में बिहार अइलें त इहां का उनका खूब सहयोग कइनी। लोग इनका बिहार के गांधी कहे लागल। आजादी का लड़ाई में इहां का कई बेर जेल गइनी।

आपन चलत वकालत छोड़ के इहां का आजादी का लड़ाई में कूद पड़ल रहीं। पटना में सदाकत आश्रम के स्थापना में इनकर लमहर योगदान रहे। भोजपुरी भाषा के प्रति इनका अगाध प्रेम रहे। केहु भोजपुरी भाषा बोले वाला से उहां का भोजपुरिए में बतकही करीं।

आजादी मिलला के बाद जब राष्ट्रपति पद के बात आइल। त्याग, तपस्या, विद्वता के बल पर इहां के देश के सबसे ऊँच पद राष्ट्रपति पद के सुशोभित कइनी। राष्ट्रपति का रूप में भी इहां का सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक बनल रहनी। राष्ट्रपति का रूप में मिलेवाला दस हजार वेतन के चालीस प्रतिशत इहां का ना लिहीं, उ धन गरीब लोगन के सेवा में लगावल जात रहे। 1962 में बारह वरिस राष्ट्रपति पद पर रहला के बाद अवकाश ग्रहण कइनी। कर्त्तव्य परायणता आ ईमानदारी में इनकर उदाहरण दिहल जाला। अवकाश ग्रहण करे के अवसर पर इनका देश के सबसे लमहर अलंकरण ‘भारत रत्न’ से इनका सम्मानित कइल गइल। राष्ट्रपति भवन छूटला का बाद इहां का पटना के सदाकत आश्रम में संत खानी त्यागमय जीवन बितावत रहीं। एही बीच 28 फरवरी 1963 के इहां के निधन हो गइल। अपना अइसन सपूत पर भोजपुरिया लोगन माई के गुमान बा ।

# अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. भारत के पहिला राष्ट्रपति के भइल ?
2. 'बिहार के गांधी' केकरा के कहल जात रहे ?
3. राजेन्द्र बाबू के अवकाश ग्रहण कइला पर उनका कवन अलंकरण से सम्मानित कइल गइल।
4. राजेन्द्र बाबू अपना वेतन के केतना प्रतिशत ना लेत रहलें।
5. राजेन्द्र बाबू के जन्म भईल रहे–

   (क) 1879 में (ख) 1889 में

   (ग) 1884 में (घ) 1902 में
6. राजेन्द्र बाबू के जन्म कवन गांव में भइल रहे ?

   (क) ठेपहां (ख) सीवान

   (ग) जीरादेई (घ) छपरा
7. राजेन्द्र बाबू के इन्ट्रेन्स में प्रथम श्रेणी में कवन स्थान मिलल रहे ?

   (क) द्वितीय (ख) प्रथम

   (ग) तृतीय (घ) एहमें से कवनो ना

**2. लघुउत्तरात्मक प्रश्न :–**

1. राजेन्द्र बाबू के परीक्षा के उत्तर पुस्तिका पर परीक्षक का लिखले रहलें ?
2. राजेन्द्र बाबू अवकाश ग्रहण कइला पर कवना शहर में कहवाँ रहत रहस ?

**3. दीर्घउत्तरात्मक :–**

1. राजेन्द्र बाबू के छात्र जीवन के वर्णन करीं।

11. **अर्थ लिखीं :–**

(क) होनहार बिरवान के होत चिकने पात

(ख) श्री गणेश कइल

12. **नीचे के बाक्यन में विशेषण चुनीं :–**

(क) भारत के पहिला राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।

(ख) अइसन कुशाग्र बुद्धि वाला व्यक्ति

(ग) आपन चलत वकालत छोड़ के आजादी का लड़ाई में कूद पड़लें।

(घ) इहां का त्यागमय जीवन बितावत रहीं।

# परियोजना कार्य

राजेन्द्र बाबू खानी कवनो आउर महापुरूष के जीवनी लिखीं।

## शब्द भंडार

| | | |
|---|---|---|
| प्रतिभा | = | तेज |
| परीक्षक | = | जे परीक्षा के कॉपी जांचे ला |
| कुशाग्र बुद्धि | = | तेज बुद्धिवाला |
| स्मरण शक्ति | = | इआद करे के ताकत |
| सहयोग | = | मदद |
| अगाध | = | बहुत |
| कर्त्तव्य परायणता | = | कर्त्तव्य के पालन कइल |
| अलंकरण | = | सम्मान |
| खानी | = | जइसन (जैसा) |

## पाठ-नौ

**–गुरुदयाल सिंह**

*पंजाबी के प्रसिद्ध कथाकार गुरूदयाल सिंह के जनम 10 जनवरी 1933 पंजाब के जैतो कस्बा में भइल रहे।*

*इहाँ ज्ञानपीठ सहित कई गो पुरस्कार मिल चुकल बा।*

*इहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव बा- 'मढ़ी का दीवा' (1966) घर और रास्ता (1968) अध-चाँदनी रात (1983), पाँचवाँ पहर (1988) सब देस पराया (1995) साँझ-सवेर (1999)*

*प्रस्तुत कहानी में सामाजिक विषमता के बतावत ओकरा के दूर करे के प्रेरणा देता।*

# गरमी के एगो दिन

ताजा हवा खातिर खाली एकही गो जंगला खुलल रहे। बाकिर एगो मोड़ पर आके जब गाड़ बायाँ ओर घूमल त लू के एगो झोंका आइल आ प्रीतपाल के देह जर उठल। ऊ अँचरा के मुड़ी के चारू ओर लपेटत जंगला का ओर पीठ करत सीट का ऊपर सूतल मुन्नी के लू से बचावे के जतन कइली आ कहली ''ओह हो! जीत जी, एकरा के बंद क दी।''

जीत सिंह जल्दी से उठले आ जंगला बंद कर दिहले।

अब हवा खाली जंगला के दरार से आ सकत रहे। पंखा पूरा रफ्तार से चलत रहले सन बाकिर हवा ओहिंगन बहुत गरम आवत रहे। बहरा धरती भट्ठी खानी तपत रहे। गाछन के पतइओं झंवाइले खाने लागे। कई जगहा ऊपर से धरती पर आग के लाफ खानी निकलल लउकत रहे।

चारों ओर जइसे आग बरसत रहे।

''रेलवे के का खाक व्यवस्था बा।'' प्रीतपाल कहली ''कम-से-कम ऊ लोग हरेक गाड़ी के संगे एगो एयरकंडीशंड डिब्बा त लगाओं। फर्स्ट क्लास के किराया दी आ गरमियों में जरी!''

''खाली दू स्टेशन आउर रह ऽ तानी स ऽ। ''जीत सिंह जइसे अपनही आप से कले आ प्रीतपाल का मुँह का ओर ताके लगले कि पिछला स्टेशन से स्टेशन से अपेक्षाकृत ऊ अब बेसी कुम्हला गइल होखे। ऊ सुराही से पानी के गिलास भरले आ थर्मस से बर्फ निकाल के ओह में डाल दिहले। लगभग आधा बरफ गल गइला का बाद ऊ प्रीतपाल के पानी के गिलास दिहले त ऊ चुपचाप पकड़ के पी गइलीं।

''तू ओठँग जा पाल जी, बेबी के हम सँभार लेम।''

जीत सिंह कुछ चिंता से कहले।

''ओठँग के कवन चैन आ जाई। ओह हो! हमार त जीव घबड़ाता।''

ऊ ओही तरह बइठल-दूनों हाथन से चेहरा के दबवले नीहुर के मुँहकुरिये मुन्नी का संगे ओठँग गइले। उनकर रेशमी कुर्ती पंखा के हवा में उड़त रहे, बाकिर देह जरत रहे। लिपस्टिको ऊ

एह तरह लागत रहे जइसे ओठन पर गरम राखि लगवले होखस। ओंठन के तर करे खातिर ऊ बेर-बेर ओपर जीभ फेरत रही।

मुन्नी रोवे लागल त जीत सिंह उठाके नहानघर में ले गइले। उहाँ ओकरा के बहुते देर ले नहवावत रहले। पानी भलही ठंडा ना रहे, बाकिर एकरा बादो लड़की के होश-खानी आ गइल। ऊ मुस्कात हाथ-गोड़ मारे लागल आ आपन मुट्ठी बाँन्ह के पानी के बूँद चमसे लागल। मुन्नी के तउलिया में लपेट के सीट पर ओटँगा दियाइल त ऊ ओहिंगन मुट्ठी चूसत सूत गइल। बाकिर पंखा के हवा से ओकर भींजल देह कुछे मिनट में तउलिया सहित सूख गइलं जीत सिंह सुराही से पानी के गिलास भरले आ चिरूआ से तउलिया पर छिटे लगलें उनकर मन एकरा बादों बेचैन रहे, कबो मुँहकुरिये ओठँगल प्रीतपाल के ओर ताकस त देखे लागस। सपुर खत्म होखे के नाँव ना लेत रहे आ गरमिओं कहत रहे कि आज हमहीं रहेम।

''पाल जी, आउर पानी दीं?''

जीत सिंह पूछले त पगीतपाल ओठँगले-ओठँगले मूँड़ी हिला दिहलीं बुझाइल कि उनकर

जबानों सूखत रहे। जीत सिंह तनी भ्फाँवर खानी लउकता, उनका श्वेत गर पर पसेना के छोट-छोट दागि लउकता।

ओने से मुँह फेर के जीत सिंह मुन्नी का ओर देखले। ओकर केश सोना के तारन खानी हिलत रहे बाकिर केशन के जड़ पसेना से फेर बड़ी सावधानी से पुेर केतना बेर गिलास में अंगुरियन के भींजाके ओकरा सगरी देह फेर पसेनो से भींजला का वजह से ऊ हाथ-गोड़ रख के ओकरा के थपथपावे लागस।

मुन्नी के थपथपावत, जीत सिंह फेर जंगला के सीसा से बहरी नजर दउड़वले। धरती ओहिंगन तपत रहे। कुछ जगहन पर वइसही आग के लाफ निकलत लउकत रहे। बाकिर गाड़ी से लगभग दू सौ गज दूर एगो किसान आपन काम करत रहे।

ऊ मुड़ी पर अंगउछी बनहले रहे। एक हाथ में टूटही जूती धइले आ दूसरका कान्हा पर रखल कस्सी के दसता थमले शाइत पानी के पारी खातिर भागल जात रहे। जीत सिंह हरानी से ओकरा ओर देखल रहलें जइसे ऊ आदमी ना, भूत होखे।

''कुछ घबड़ा के उठत प्रीतपाल पूछलीं उड़त लटन के अंगुरियन्से ठीक करत, ऊ फेर 'ओह हो' कहत एगो लमहर साँस लिहली आ बहुते निढ़ाल आँखन से ओकर ओर देखली त आँख बहुते लाल रहें।

जीत सिंह के ध्यान बाहर से टूट गइल। तबे प्रीतपाल के आँख के ओर देखले त ठीक से जबाब ना दे पवले।

''बऽ-बस अब पन्द्रह मिनट आउर लागी।''

समय के बीते के रहे, बीत गइल आ ओह लोग के

शहर के स्टेशनो आ गइल। बाकिर दरवाजा खोले से पहिले प्रीतपाल के अइसन डर लागल

जइसे ऊ कवनो भट्ठी में गिरे जात होखस।

ऊ मुन्नी के संभार के तउलिया में लपेटली आ अपना दाती से लगा लिहली ओकर हती चुकी, चंबा के कली खानी चेहरा जब अँचरा से तोपे लगली त गहिरा साँस भरत बहरी कावर देखली त घबड़ा गइलीं।

गाड़ी रोक गइल रहे। जीत सिंह एतना फुर्ती से कुली से समान उठवा के टैक्सी में रखवा दिहले कि जबले प्रीतपाल टैक्सी के लगे पहुँचली, ऊ दरवाजा खोलले खड़ा रहले आ ड्राइवर टैक्सी स्टार्ट क लेले रहे। प्रीतपाल गरमी से बेहाल मुन्नी के थमले जइसे पिछलकी सीट पर ध म से गिर पड़ती। एक बेर ऊ फेर मुन्नी के ठीक कके गोदी में लिहली आ ओकरा कोमल मुँह कावर देख के आपन गरदन दायाँ ओर घूमावत निढ़ाल होके आँख मूद लिहलीं।

बाकिर जीत सिंह जब पावदान के ऊपर गोड़ रखले त उनका अपना पीठ के पीछे अजीब बोली सुनाइल–

''एक पइसा धरम के नाँव पर।''

घूम के देखले, एगो छोटी चुकी लड़िका जवन मुश्किल से तीन–

चार के होई, करिया–भुँचेंग, कपार से गोड़ ले एकदम लँगटे, तपल लोहा जइसन सड़क पर गोड़ बेर–बेर, हाली–हाली ऊपर उठावत रहे–एकदम वइसही जइसे मुन्नी के चाभी वाला खेलौना उछल– कूद करेत्वा।

एक नजर में, जीत सिंह ओकरा के मूड़ी से गोड़ ले देखले। ओकरा आँखन में गहिरा वेदना रहें ओकर छोट–छोट जुड़ल हाथन के अंगुलियनों में कवनों अनुनय रहे, बुझाइल–एकदम वइसही जइसे ओकर आँख जीत सिंह के ओर अनुनय से निहरले रहे..........अजबे विचार रहे जवन एह प्रकार जीत सिंह के लड़िका के ओर देखत मन में कौंध गइल रहे।

''धरम के नाँव पर एक पइसा।''

आ जीत सिंह बड़ी जल्दी से पैंट के पाकिट में हाथ

डालले आ दस पइसा के सिक्का निकाल के ओकरा के पकड़ा

दिहलें तबे जल्दी से ऊ प्रीतपाल के संगे बइठ गइले आ फेर ओह

लड़िका के देखे खातिर एह प्रकार से बहरी झाँकले जइसे उनका बहरी के धाम में झुलस जाये के डर होखे।

बाकिर ऊ लड़िका रूखी खानी सामने वाला तागा

शैड का ओर भागल जात रहे बाकिर शैड से तनी एनहीं ऊ एकदम रोक गइल।

फुटपाथ के संगे तनी सा पाँक रहे, जवना में अपना गोड़ के ऊ पोतत रहें हाली-हाली गोड़न के पाँक से भींजावत दस पइसा के सिक्का के ओर देख-देख के मुस्कियात रहे। तबे सिक्का के जोर से दूनो हाथन में दबा के पहिलहीं खानी ऊ एतना

तेज दउड़ल कि केहू ओकरा के पकड़े खातिर पीछे से आ रहल

ड्रायवर टैक्सी घूमा के चौड़ा सड़क के ऊपर ले

आइल रहे आ सड़क पर रेक्शा के भीड़ के वजह से ऊ तेज ना चला पावत रहें जब टैक्सी तांगा शैड के लगे से गुजरल त जीत सिंह देखले कि ऊ लड़िका शैड के स्तंभ के संगे बइठल एगो

करिया-कलूटी बुढ़िया के लगे खड़ा रहे। ऊ बुढ़िया आन्हर रहे।

लड़िका मुट्ठी दबवले, हँसत बुढ़िया से कुछ कहत रहे।

बुढ़िया के चेहरा के झुरी कुछ आउर सघन हो गइल रहे

आ ओठन पर मुस्की रहे। बुढ़िया काँपत हाथन से लड़िका के

मुट्ठी जकड़ लेले रही बाकिर लड़िका ओकरा के छोड़ा के भाग

गइल। हँसत-हँसत ऊ फेर दू-चार छलाँग लगाके बुढ़िया के लगे आ गइल आ ओही तरे आपन बंद मुट्ठियन के ओकरा मुँह से छुआ देहलस। बुढ़िया काँपत अंगुरियन से ओकरा मुट्ठियन के फेर जकड़ लिहलसं अबकी बेर ऊ जोर-जोर से हँसत अपना छोट-छोट अंगुरियन के खोल दिहलस। बुढ़िया ओकरा तरहथी पर से जब दस पइसा के सिक्का उठावत टोवलस त ना खाली ओकरा अंगुरि बल्कि चेहरो काँपत लउकत रहे। ऊ मुस्कियात रहे।अब वे टैक्सी ओकरा लगे से गुजर चुकल रहे बाकिर जीत सिंह बहुते दूर ले लड़िका के हँसी सुनात रहे।

उनका अइसन लागल कि केहू उनका सीट के पिछला सीसा पर मुट्ठी-भर के कली बिखेरत होखे! ड्रायवर एअरकंडीशन चला देले रहे, जवना से गरमी कम हो गइल रहे आ टैक्सी चौंड़ा सड़क पर नाँव खानी पँवरे लागल रहे बाकिर जीत सिंह देखले, प्रीतपाल अबहियों गरदन लुढ़कवले निढ़ाल रहले।

# अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. 'गरमी के एगो दिन' कवना विधा के रचना ह?
2. 'गरमी के एगो दिन' कवना भाषा के कहानी ह?
3. एह कहानी में तहरा कवन पात्र सबसे नीमन लागल?
4. जीत सिंह अपना परिवार के संगे कवना चीज में यात्रा करत रहले?
5. जीत सिंह सुराही में से का निकलले?

**2. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

1. गुरदयाल सिंह के परिचय दऽ।
2. जीत सिंह के रहे?
3. किसान कहाँ लउकले?
4. किसान कहाँ जात रहले?
5. जीत सिंह के परिवार कवना चीज से परेशान रहे?

**3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. गरमी से बचे खातिर प्रीतपाल का–का उतजोग कइलीं?
2. 'गरमी के एगो दिन' के सारांश लिख ऽ।
3. भोजपुरी के कवनो लोककथ के दोसरा भाषा में लिख ऽ।

# परियोजना कार्य

1. अपना अगला–बगल देख के बताव कि गरमी के दिनो में के काम करेला।

## पाठ-दस

**–सूर्यदेव पाठक 'पराग'**

*सूर्य देव पाठक 'पराग' के जनम बिहार राज्य के सारन (अब सीवान) जिला के बगौरा गाँव में 23 जुलाई 1943 ई० में भाइल ।*

*'पराग जी' भोजपुरी, हिन्दी आ संस्कृत तीनो भाषा में गद्य आ पद्य के अनेक विधा में रचना कइले बानी । इनकर रचनन में 'भइल सवेर' बाल गीत संग्रह के अलावे 'भँवर में नॉव' अँजुरी भर पूफल, 'अलग-अलग रंग', 'जंजीर' नाटक आ 'प्रश्न-चिन्ह' कहानी संग्रह प्रकाशित बा। कई गो आउरी संग्रहे के इहाँ का सम्पादन कइले बानी ।*

*'बढ़त चल ऽ' गीत का माध्यम से कवि देश के नयकी पीढ़ी के कइसनो परिस्थिति के सामना करत आगे बढ़े के सन्देश देत वाड़े ।*

# बढ़त चलऽ

नौनिहाल देश के–
बढ़त चलऽ बढ़त चलऽ!
कुच-कुच अन्हार रहे
सामने पहाड़ रहे,
पीछे ना झाँक के–
चढ़त चलऽ, चढ़त चलऽ ।
आन्हीं-तूफान रहे
साँसत में प्राण रहे,
धनुही पर तीर अस
बढ़त चलऽ, बढ़त चलऽ ।
जेठ दूपहर रहे
गरम बेतरह रहे,
आग के लपेट से
हे वीर, मत डरत, चलऽ ।
दुश्मन के तूर दऽ,
ठीके से थूर दऽ ।
छाती पर लात तू
शान से रखत चलऽ ।

# अभ्यास

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. (क) 'बढ़त चलऽ' कविता कवन भाव जागावे ला ?

   (i) वीरता (ii) देश प्रेम

   (iii) हिम्मत (iv) कुल्हि

   (ख) 'बढ़त चलऽ' कविता के कवि के बा ?

   (i) सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला (ii) सूर्य देव पाठक 'पराग'

   (iii) प्रसादजी (iv) स्वर्ण किरण

   (ग) 'बढ़त चलऽ' कविता कहवाँ झाँके से कवि मना कर रहल बाड़ें ?

   (i) पीछे (ii) सामने

   (iii) बगल (iv) नीचे

   (घ) एह कविता में केकरा के तूर देवे के कहल बा ?

   (i) दुश्मन के (ii) हिन्दुस्तान के

   (iii) पाकिस्तान के (iv) वीर के

**2. नीचे के पंक्तियन के पूरा करीं :–**

   (क) कुच-कुच अन्हार रहे

   ..............................

   (ख) आग के लपेट से

   ...................... डरत चलऽ ।

   (ग) दुश्मन के तूर दऽ

   ठीके से थूर दऽ ।

**3. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

   (क) नौनिहाल देश के केकरा कहल गइल बा?

   (ख) कवि नौनिहाल के कवना चीज से डरे के मना करत बाड़े ?

**4. नीचे लिखल शब्दन से वाक्य बनाई :–**

वीर

दुश्मन

दुपहर

प्राण

आग

**5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–**

(क) बढ़त चलऽ कविता में कवि केकरा कवन–कवन परिस्थिति में बढ़त चले के कह रहल बाड़े ?

# परियोजना कार्य

(क) बढ़त चलऽ कविता जइसन कवनो दूसर उद्‌बोधन गीत के लिखीं।

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| सांसत | = | कष्ट में, कठिनाई में |
| धनुही | = | धनुष |
| तीर | = | धनुही पर रख के चलावे वाला उपकरण |
| नौनिहाल | = | छोट बच्चा |
| थूर | = | चूर कइल |
| बेहतर | = | बहुत अच्छा, उससे अच्छा |

### पाठ–ग्यारह

## भोलानाथ गहमरी

*भोजपुरी गीतन के राजवुफमार भोलानाथ गहमरी के जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला के गहमर गाँव में भइल रहे । इहाँ के भोजपुरी के सुन्दर गायक रही, इहाँ के अबले भोजपुरी काव्य–संग्रह 'बयार पुरवइया', 'अंजुरी भर मोती' आ 'लोक–रागिनी' के प्रकाशन भइल बा, पिफराक गोरखपुरी के शब्दन में 'गहमरी जी के कविता में एगो नया जोश, गजब के उर्वरता आ नदी के कल–कल, छल–छल प्रवाहित बा ।'*

*'देशवा के दिहलु वरदान' कविता इहाँ के काव्य संग्रह 'अंजुरी भर मोती' से लिहल गइल बा । ई राष्ट्रीय भाव के कविता ह । एह में देश के महिमा आ बलिदान के चर्चा कइल बा ।*

# देशवा के दिहलु वरदान

देशवा के दिलहु वरदान, मइया भारती
देशवा के दिलहु वरदान ।
घर–घर में एकता के बहली बेयरिया,
उगेला लगनिया के चान ।

सुरूज किरीन बनि जगली जवनिया
मटिया में जागेला, किसान मइया भारती ।
देशवा के दिहलु वरदान ।।

जिनगी में आजु काली रतिया सिराइल
चमकल बा नयका विहान
चमकेला हमरो अमर इतिहासवा
चमकी उठेला बलिदान, मइया भारती ।
देशवा के दिहलु वरदान ।।

ठावें-ठावें हमरो सजग बा सिपहिया
सजग बा सगरो सिवान
धरती के लजिया पर दगिया जे लागे
कोटि-कोटि जुझेला जवान मइया भारती ।
देशवा के दिहलु वरदान ।।

तोहसे जो माई केहू अंखिया देखाई
धरती मिलाइव आसमान
लागे नाहीं पइहें अँचरवा में दगिया
जब लगी घट में परान, मइया भारती ।
देशवा के दिहलु वरदान ।।

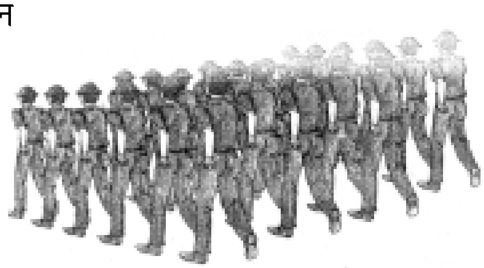

## अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

1. 'देशवा के दिहलु वरदान' कविता केकर लिखल बा ?
2. घर-घर में कवना चीज के बयार वहता ?
3. जवानी का बनके जगली ?
4. ठावें-ठावें के सजग बा ?
5. किसान कहवाँ जागेला ?

**2. नीचे के पंक्तियन के पूरा करीं :–**

(क) चमके ला हमरो अमर इतिहासवा

चमकि उठेला वलिदान, .................................. ।

(ख) धरती के लजिया पर दगिया जे लागे

कोटि–कोटि जुझेला ......................... ।

(ग) लागे नाहीं पाइहें अंचरवा में दगिया

............................, मइया भारती ।

**3. लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

1. मइया के वरदान से का–का चमकेला ?
2. धरती के लाज बचावे ला केजूझेला ?
3. जब तक तन में प्राण रही का ना होई ?

**4. दीर्घउत्तरीय प्रश्न :**

1. 'देशवा के दिलहु वरदान, मइआ भारती' कविता के भावार्थ लिखीं ।
2. मईआ भारती के वरदान से देश में कवन–कवन परिवर्त्तन पावल जाला ।
3. एह पाठ से पाँच गो जाति वाचक संज्ञा चुन के लिखीं ।
4. 'अंखिया देखाई', 'धरती मिलाइब असमानवा' मुहावरा के अर्थ लिखीं ।

# परियोजना कार्य

देश भक्ति के अइसने केहु अउरों कवि के कविता इआद होखे भा कहीं पढ़ ले होखीं त लिखीं ।

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| बेयरिया | = | हवा |
| लगनिया | = | धून |
| मइआभारती | = | भारत माई |
| सिराइल | = | ठंढा भइल, खतम भइल |
| ठाँवे-ठाँवें | = | जगह-जगह, डेग-डेग पर |
| सिवान | = | कवनो जगहा के आखिरी किनारा, सीमा |
| कोटि-कोटि | = | करोड़-करोड़ |
| जूझेला | = | भिड़ेला, लड़ेला |
| अंचरवा | = | अंचरा |
| घट | = | शरीर, तन |
| परान | = | जान, प्राण |
| सजग | = | सावधान |
| सगरो | = | सब जगहा |

## पाठ-बारह

## रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल'

*विकल जी के जनम 16 जून 1947 के सारन जिला के अरदेवा गाँव में भइल रहे। विकल जी शिक्षक पद से अवकाश ग्रहण क के साहित्य सेवा में लागल बानी। इहां के 'तेरह तरेगन', 'दाना मोती के', 'बाल गीतन के छांव में', 'कहिया ले बहुरी बिहान', 'बलिदानी के मोल के', 'प्रदूषण मुत्तिफ संग्राम और तुलसी के राम' आदि बहुते किताब प्रकाशित बा।*

*'पेड़-पौधा : हमार जिनगी' पर्यावरण पर आधारित उनकर भोजपुरी रचना ह। इ रचना छात्र लोगन के भोजपुरी भाषा का ज्ञान कराबे के संगे वैज्ञानिक चेतनो जगावे के काम करी। पर्यावरण सुरक्षा का दिशाई ओकर ध्यान खींची।*

# पेड़-पौधा : हमार जिनगी

–रामज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल'

आदमी का एह धरती पर पांव धरे का पहिलहीं पेड़-पौधा ओकरा जिनगी के सगरी जोगार कइले रहे ला। सांस लेवे ला ऑक्सीजन होखे भा पेट भरे ला भोजन के जोगार। पर्यावरण के सुरक्षा के बात हो भा जीवन के रक्षा के सभे कुछ पेड़-पौधा के असरा पर रहेला। सभ्यता का विकास का संगे जिनगी में कपड़ा से लेके घर-दुआर आ ओह में सजावे वाला सरजाम पेड़-पौधा से मिलेला।

कवनो जीव का जिनगी में सबसे कीमती चीज हवा ह। हवा का अभाव में एको क्षण जीयल कठिन बा। एही से ऑक्सीजन के हमनी का प्राण-वायु कही ले। हम साँस लेवे में एकरे

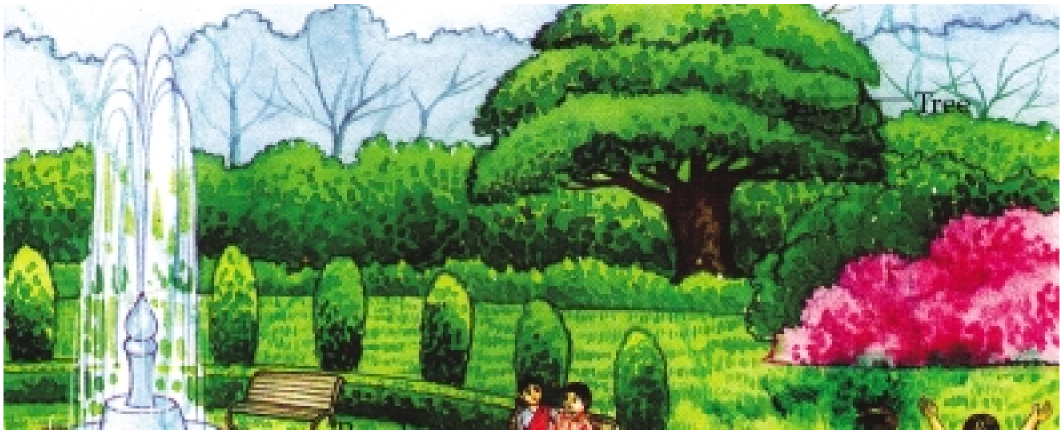


ग्रहण करीले आ कार्बनडायक्साइड छोड़ि ले। एह कार्बनडायक्साइड के ऑक्सीजन में बदल के हमरा देवे वाला पेड़-पौधा बा। सूर्य का प्रकाश में इहे पेड़-पौधा के पतई मांड (स्टार्च) बना के भोजन के जोगार जुटावे ली सन। इहे भोजन बनावे के सिलसिला में ऑक्सीजन निकाले ला जे जीव-जन्तु के जिनगी देवेला। आदि काल से आज तक मांसहारी भा शाकाहारी कवनो प्राणी होखे ओकर जिनगी सीधा चाहे घुमा-फिरा के पेड़-पौधा पर ही टिकल बा। हमनी के शास्त्र-पुराण में इ बात साफ-साफ कहल बा जे संसार में हवा, पानी आ मीठ बोली रतन ह। मूर्ख लोग एकरा ना समझे आ पत्थर के टुकड़ा के रतन बुझे ला। अगर एह असली रतन के जोगार पेड़-पौधा ना जुटाबे त संसार के कुल्हि जीव टुकुर-टुकुर ताकते तरेगन गिनत रह जइहें।

भोजन, वस्त्र आ घर ई सभ जरूरतन में अगुआन मानल गइल बा। भोजन अन्न, फल-सब्जी सभे पौधे से मिलेला। कपड़ा के बारे में सोची त कपास आ पाट आदि पौधे बा जेकरा रेशा से धागा बनेला आ कपड़ा तैयार होला। रेशम के उत्पादन करे वाला कीड़ा भी पेड़ के पतइ पर पलेला। एही से रेशमी कपड़ा बनेला। जहाँ तक सर्दी-गर्मी, धूप-बारीस से बचेला घर चाहीं त ओकरो में पेड़-पौधा के लमहर योगदान रहेला इ कुल्हि जीव-जन्तु के जीवन में महत्व के संगे-संगे पेड़-पौधा के सबसे लमहर आ महत्वपूर्ण काम बा, पर्यावरण के शुद्ध कइल।

आज जंगल काट के शहर बसावल जा रहल बा। पेड़-पौधा के काटे के लोग आपन सुख के सरजाम सजा रहल बा। बाकिर एकर सबसे बुरा असर पर्यावरण पर पड़ रहल बा। पेड़-पौधा के कटला से वायुमंडल प्रदूषित हो रहलबा। ऑक्सीजन के कमी हो रहलबा। कार्बनडायक्साइड बढ़ रहल बा। इ प्राणी के जिनगी ला बहुते खतरनाक बाटे। एगो अइसन समय आई जब ऑक्सीजन

के कमी से प्राणी के जिनगिए खतरा में पड़ जाई। एतने पेड़–पौधा के कमी से वर्षा में कमी हो रहल बा जेकर प्रभाव खेत–खलिहान से लेके वातावरण तक पर पड़ रहल बा।

एह से पर्यावरण के बचावे के जवन आन्दोलन चल रहल बा ओह में पेड़–पौधा लगावे पर खूब जोर दिहल जा रहल बा कहल जा ला पेड़ लगाईं : पर्यावरण बचाईं।

एक पेड़ सौ पुत्र समाना।

# अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–**

   (i) आदमी के जीवन में का जरूरी बा ?

   (क) पेड़-पौधा　　(ख) पर्यावरण

   (ग) जंगल　　(घ) सब

   (ii) पेड़-पौधा के जीवन में बहुत महत्व बा काहे ?

   (क) ऑक्सीजन खातिर　　(ख) साँस खातिर

   (ग) पूजा खातिर　　(घ) सब

   (iii) पेड़-पौधा के कटला से वायुमंडल में का प्रभाव पड़ता ?

   (क) वातावरण प्रदूषित होला　　(ख) ऑक्सीजन के कमी होला

   (ग) कार्बन डाई ऑक्साइड बढ़े　　(घ) सब प्रभाव पड़ेला

2. **लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

   (क) पेड़-पौधा : हमार जिनगी के लेखक के बा ?

   (ख) एक पेड़ सौ पुत्र समान काहे कहल गइल बा ?

   (ग) जिनगी के सबसे कीमती चीज हवा ह कइसे ?

3. **दीर्घउत्तरीय प्रश्न :–**

   (क) पेड़-पौधा के जीवन में बहुत महत्व बा कइसे विस्तार से लिखीं।

   (ख) पर्यावरण संतुलन खातिर करे के चाहीं ?

   (ग) हमनी के ऑक्सीजन के प्राप्ति कहँवा से होला ?

4. **नीचे लिखल शब्दन से संज्ञा, विशेषण चुनी :–**

   पेड़-पौधा, सुन्दर, कपड़ा, मीठ, पत्थर।

5. **पर्यावरण बचावे खातिर सरकार कवन-कवन योजना चलावता, अपना आस-पड़ोस से पता करीं।**

**शब्द भंडार**

| | | |
|---|---|---|
| पर्यावरण | = | चारों ओर के वातावरण |
| सरजाम | = | सामान |
| जोगार | = | व्यवस्था |
| मांसाहारी | = | मांस खायेवाला |
| शाकाहारी | = | मांस ना खायेवाला |
| रतन | = | कीमती पत्थर |
| अगुआन | = | पहिल जरूरत |
| प्रदूषित | = | शुद्धता खतम भइल |

# भोजपुरी व्याकरण

## 1. संज्ञा

**परिभाषा** - कवनो व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम के संज्ञा कहल जाला । जाइसे-राम, सीमा, लइका, पटना, बुढ़ापा आदि ।

### संज्ञा के भेद

**संज्ञा के पाँच गो भेद होला -**

(i) व्यक्ति वाचक संज्ञा ।

(ii) जाति वाचक संज्ञा ।

(iii) भाव वाचक संज्ञा ।

(iv) समूह वाचक संज्ञा ।

(v) द्रव्य वाचक संज्ञा ।

**(i)** **व्यक्ति वाचक संज्ञा**- जवन संज्ञा से कवनो खास व्यक्ति, वस्तु, जगह आदि के बोध होला, ओकरा के व्यक्ति वाचक संज्ञा कहल जाला ।
जइसे- राम, सीता, कुरान, बाईबिल, चमनपुर आदि ।

**(ii)** **जातिवाचक संज्ञा** - जवना संज्ञा से जाति भर के बोध होला ओकरा के जातिवाचक संज्ञा कहल जाला ।
जइसे– लड़का, लड़की, शहर, देश आदि ।

**(iii)** **भाव वाचक संज्ञा** - जवना संज्ञा से व्यक्ति भा वस्तु के गुण आ धरम के बोध होला, ओकरा के भाव वाचक संज्ञा कहल जाला ।
जइसे– लम्बाई, चौड़ाई, मित्रता, खटास, सजावट आदि ।

**(iv)** **समूहवाचक संज्ञा** - जवना संज्ञा से व्यक्ति भा वस्तु के समूह के बोध होला, ओकरा के समूहवाचक संज्ञा कहल जाला ।
जइसे– परिवार, सभा, सेना, दल आदि ।

(v) **द्रव्यवाचक संज्ञा** - जवना वस्तु के नापल भा तउलल जाय, ओकरा के द्रव्यवाचक संज्ञा कहल जाला ।

जइसे– सोना, चाँदी, हीरा, मोती, दूध, दही, कपड़ा आदि ।

## अभ्यास

1. **नीचे लिखल वाक्य में संज्ञा चुन के लिखीं ।**
   (क) राम पढ़त रहस ।
   (ख) गाय घास चरत विया ।
   (ग) लड़किन मैदान में खेलत बिया ।
   (घ) चीनी मीठ होला ।
   (ड.) कायरता अच्छा ना होला ।
   (च) मेला देखे ला लड़िका बेचैन रहेला ।
2. **नीचे के वाक्यन में जाति वाचक आ व्यक्तिवाचक संज्ञा चुनी ।**
   (क) हाथी सबसे बड़ जानवर बा ।
   (ख) हिमालय एगो पहाड़ बा ।
   (ग) राम सब लड़िका से नीमन बा ।
   (घ) लड़की घर के लक्ष्मी होली ।
   (ड.) राम भागल जात रहे आ लोग देखत रहे ।

3. **नीचे के वाक्यन में समूहवाचक, भाववाचक, आ द्रव्यवाचक संज्ञा चुनीं ।**
   (क) मैदान में सभा होत रहे ।
   (ख) बुढ़ापा में बड़ा दुख होला ।
   (ग) घीउ के पूरी नीमन लागेला ।
   (घ) एक टोली आगे बढ़ल जात रहे ।
   (ड.) बचपन सबसे नीमन होला ।

4. **नीचे लिखल संज्ञा शब्दन के वाक्य में प्रयोग करीं**
   किताब, गेन्द, गंगा, बगीचा, दूध

5. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**(क) सही जोड़ा बनाईं -**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | व्यक्ति वाचक संज्ञा | (i) | शिक्षिका |
| (ii) | जाति वाचक संज्ञा | (ii) | गुच्छा |
| (iii) | समूहवाचक संज्ञा | (iii) | घीव |
| (iv) | भाव वाचक संज्ञा | (iv) | कुरान |
| (v) | द्रव्य वाचक संज्ञा | (v) | मित्रता |

**(ख) खाली जगे भरीं -**

(i) जवना के नापल-तउलल जाला, ओकरा के ................................ संज्ञा कहल जाला।

(ii) संज्ञा के ..........................गो भेद होला ।

(iii) जवना संज्ञा से जाति भर के भेद होला, ओकरा के ................... संज्ञा कहल जाला।

(iv) जवना संज्ञा से व्यक्ति भा वस्तु के गुण, धर्म आदि के बोध होला, ओकरा के ................. संज्ञा कहल जाला

6. **लघु उत्तरीय**

(i) संज्ञा के परिभाषा उदाहरण संगे दिहीं ।

(ii) भाव वाचक संज्ञा केकरा के कहल जाला ?

(iii) समूह वाचक संज्ञा के परिभाषा दिहीं?

(iv) व्यक्ति वाचक संज्ञा का हैं ? उदाहरण दिहीं ?

7. **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

(i) संज्ञा केतना भेद होला ? उदाहरण देके समझाई ?

# 2. सर्वनाम

**परिभाषा** - संज्ञा के बदले जवना शब्द के प्रयोग कइल जाला, ओकरा के सर्वनाम कहल जाला ।

जइसे– हम, तू, राउरा, ऊ, ई आदि ।

**सर्वनाम के भेद**

(i) पुरूष वाचक सर्वनाम ।

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम ।

(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम ।

(iv) संबंध वाचक सर्वनाम ।

(v) निजवाचक सर्वनाम ।

(vi) प्रश्न वाचक सर्वनाम ।

**(i) पुरूषवाचक सर्वनाम**- जवना सर्वनाम से बोलेवाला, सुनेवाला भा जेकरा बारे में कहल जाव, ओकरा के पुरूष वाचक सर्वनाम कहल जाला ।

जइसे- रउरा, ऊ, ओकर

**पुरूष वाचक सर्वनाम के तीन गो भेद होला**

(i) उत्तम पुरूष ।

(ii) मध्यम पुरूष ।

(iii) अन्य पुरूष ।

**(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम**- निश्चितता बोधक सर्वनाम निश्चय वाचक सर्वनाम। जइसे–ई, उ, ऊ

**(iii) अनिश्चय वाचक सर्वनाम** - कुछ, आउर, कोई अनिश्चय वाचक सर्वनाम होला, एह में व्यक्ति भा वस्तु के अनिश्चय के बोध होला ।

**(iv) संबंध वाचक सर्वनाम** - सर्वनाम से सर्वनाम के जोड़े वाला शब्द सम्बन्ध वाचक सर्वनाम होला, जेकर, ओकर ।

(v) **निजवाचक सर्वनाम** - एह सर्वनाम में निजता के बोध होला ।
जइसे– आपन, हमार ।

(vi) **प्रश्न वाचक सर्वनाम** - जवना सर्वनाम से प्रश्न के बोध होला, ओकरा के प्रश्न वाचक सर्वनाम कहल जाला ।
जइसे– के पढ़ रहल बा ?
का पढ़ रहल बा?

## अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**( क ) एह में सर्वनाम के चुनीं**

(i) हम पढ़त बानी ।
(ii) रउरा घरे जायेब ।
(iii) कुछ खा लिहीं ।
(iv) इहां पुस्तक बाटे ।
(v) ऊहाँ गाय चरऽता ?

**( ख )** (i) सर्वनाम के कगो भेद होला ?
(ii) 'ऊ' शब्द से निकटता के बोध होला भा दूरता के ?
(iii) तहरा पिता के नाम का ह ? एह वाक्य में 'तहरा' का ह ?

2. **लघु उत्तरीय**

(i) निश्चय वाचक सर्वनाम का ह ?
(ii) सम्बन्धवाचक सर्वनाम का ह ?
(iii) प्रश्न वाचक सर्वनाम के उदाहरण दिहीं ?
(iv) अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण देके समझाई ?

3. **दीर्घ उत्तरीय**

(i) सर्वनाम के भेद के नांव लिखीं' ? ओकरा के उदाहरण देके समझाई ?

# 3. विशेषण

**परिभाषा** - जवन शब्द संज्ञा भा सर्वनाम के विशेषता बतावे, ओकरा के विशेषण कहल जाला। जइसे- अच्छा लइका पिता के आज्ञा के पालन करेला। इहां अच्छा शब्द लइका के विशेषता बताव ता, एह से विशेषण बा ।

**विशेषण के भेद**

(i) गुणवाचक विशेषण।

(ii) संख्यावाचक विशेषण।

(iii) परिमाणवाचक विशेषण।

(iv) सार्वनामिक विशेषण।

(v) संबंधबोधक विशेषण।

**(i) गुणवाचक विशेषण**- जवना विशेषण से गुण, दोष, रंग आकार, आ दशा के बोध होला, ओकरा के गुणवाचक विशेषण कहल जाला।

जइसे- सुन्दर, लाल, लम्बा, चौड़ा।

**(ii) संख्यावाचक विशेषण**- जवना विशेषण से निश्चित भा अनिश्चित संख्या के बोध होखे, ओकरा के संख्या वाचक विशेषण कहल जाला।

जइसे-

**( क ) निश्चित संख्या वाचक**- दू, तीन, चार

**( ख ) अनिश्चित संख्या वाचक**- कुछ

**(iii) परिमाण वाचक विशेषण** - जवना विशेषण से, नाप भा तऊल के बोध होखे, ओकरा के परिमाण वाचक विशेषण कहल जाला।

जइसे- थोड़का, बहुत, कम, एतना, केतना।

**(iv)** **सार्वनामिक विशेषण** - जवन सर्वनाम के विशेषण रूप में प्रयोग कइल जाला ओकरा के सार्वनामिक विशेषण कहल जाला।

जइसे- इ, उ, का, कवन।

**(v)** **संबंध बोधक विशेषण** - जवन विशेषण कवनो वस्तु के विशेषता बतावे, भा दोसरा वस्तु के संबंध के बारे में बतावे, ओकरा के संबंधबोधक विशेषण कहल जाला।

जइसे- घरेलू, बाहरी।

## अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**(क) विशेषण चुन के भरीं ?**

**चउथा, एक लीटर, दु मीटर, अच्छा, खराब, ई लइका, उ कुत्ता।**

(i) परिमाण वाचक ............... ।

(ii) संख्या वाचक.................... ।

(iii) गुणवाचक ..................... ।

(iv) सार्वनामिक ..................... ।

**(ख)** एह में विशेषण के चुनीं।

(i) चार गो लइका खेलत बाड़े। **उत्तर**- ...................

(ii) उहां बहुत गाय बाड़ी। **उत्तर**- ..................

(iii) एक लीटर तेल दिहीं। **उत्तर**- ..................

(iv) सीता सुन्दर बाड़ी। **उत्तर**- ..................

(v) रउरा पानी पिअब। **उत्तर**- ..................

**2. लघु उत्तरीय**

(i) संख्यावाचक विशेषण का होला ?

(ii) गुणवाचक विशेषण केकरा के कहल जाला ?

(iii) परिमाणवाचक विशेषण केकरा के कहल जाला ?

(iv) सार्वनामिक विशेषण का होला ?

**3. दीर्घ उत्तरीय**

(i) विशेषण का कहाला ?

एकरा भेद के उदाहरण देके समझाई ?

# 4. विराम चिन्ह

**परिभाषा** - वाक्य भा वाक्य के सही-सही समझे खातिर विरामचिन्ह बहुत जरूरी ह, ओकरा बिना वाक्य के अर्थ अधूरा भा भ्रामक हो जाला। एकरा बारे में जानकारी दिहल जा रहल बा-

(i) अल्प विराम-चिन्ह .............. ( , )

(ii) पूर्ण विराम-चिन्ह ................. ( । )

(iii) प्रश्न वाचक-चिन्ह ................. ( ? )

(iv) विस्मयादि बोधक-चिन्ह .............. ( ! )

(v) संयोजक-चिन्ह ..................... ( - )

**(i) अल्प विराम चिन्ह** - एकर अर्थ होला थोड़ा देर खातिर ढहाराव।

एकर प्रयोग- पर, परन्तु, लेकिन, मगर शब्द के लगे होला।

**(ii) पूर्ण विराम चिन्ह** - एकर अर्थ होला पूरा ठहराव, वाक्य के समाप्ति पर एह चिन्ह के प्रयोग होला।

जइसे- राम पढ़त बाड़े, राधा गावेली।

**(iii) प्रश्न वाचक चिन्ह** - एह चिन्ह के प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य में होला।

जइसे- राउर नाँव का ह ?

**(iv) विस्मयादी बोधक** - एकर प्रयोग हँसी, दुःख, विषाद, घृणा, करूणा के भाव व्यक्त करे में होला।

जइसे- आह ! साँप मरा गइल।

**(v) संयोजक चिन्ह** - एह चिन्ह के प्रयोग निचे लिखल अवस्था में होला।

जइसे-

(क) द्वन्द समास में- माई-बाप, भाई-बहिन।

(ख) विपरीतार्थक शब्द में- नीमन-बाउर।

## अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**(क) नीचे लिखल वाक्यन में ( , ) ( । ) छूटल बा उपयुक्त जगहा पर लगाईं।**

(i) राम जात रहे

(ii) मोहन पढ़त रहे

(iii) राम श्याम आ मोहन तीनों खेलत रहे

(iv) राम कहलस उ पटना जाई

(v) जे करे के बा कर

**2. नीचे के वाक्यन में कहँवा, कवन विराम चिन्ह लागी, लगाईं।**

(i) राम लक्ष्मण भरत आ शत्रुध्न भाई रहले

(ii) के आ रहल वा

(iii) वाह केतना नीमन बा

(iv) उ रोज आवेला काम क के चल जाला

(v) का ऊ रोज आवेला ।

**3. विराम-चिन्ह के गलत प्रयोग भइल बा, भा कवनो चिह्न के प्रयोग नइखे एकरा के शुद्ध करीं ?**

(i) ऊ अइलन। बाकिर चल गइलन।

(ii) राउर नांव का बा।

(iii) आह, साँप निकलल

(iv) बाप रे केतना भयानक साँप बाटे

4. **लघुउत्तरीय प्रश्न :**

(i) अल्प-विराम चिन्ह के प्रयोग कहाँ होता ?

(ii) प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग कहाँ होला ?

(iii) विस्मयादिबोधक चिन्ह के प्रयोग कहाँ होला ?

(iv) संजोजक चिन्ह के प्रयोग कहाँ होला ?

5. **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :**

(i) एगो अइसन वाक्य बनाई, जवना में प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग होखे।

(ii) विराम-चिन्ह कउ प्रकार के होला सब भेद के प्रयोग क के बताईं।

# 5. मुहावरा

भोजपुरी में मुहावरा के बहुत अच्छा प्रयोग भईल बा। एकरा प्रयोग से वाक्य में खूबसूरती आ जाला।

कुछ मुहावरा के प्रयोग देखल जाव–

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | **अगुँठा देखावल (धोखा-दिहल स्वीकार ना कइल)** | - | काम निकल गइला पर लोग अगूँठा देखावेला। |
| (ii) | **आँख मारल (इशारा कइल)** | - | उ आँख मार के जाये के कहलें। |
| (iii) | **कलम तुरल (खूबलिखल)** | - | परीक्षा में मोहन कलम तुर के लिखलस । |
| (iv) | **गाल फुलावल (रूस गइल)** | - | समय पर खाएक ना मिलला से अभिषेक गाल फुला लेले। |
| (v) | **लोहा के चना चबावल (बहुत कठिन काम कईल)** | - | गंगा नदी के पार करे खातिर लोहा के चना चबावें के पड़ल। |
| (vi) | **पत राखल (इज्जत राखल)** | - | रउरा पत रखला से हमार काम हो गइल। |
| (vii) | **आंख लाल कइल (क्रोध कइल)** | - | लड़िकन के बदमासी देख के ऊनकर आंख लाल हो गइल । |
| (viii) | **हाथ मलल (पछताइल)** | - | परीक्षा आ गइल ना पढ़ला से ऊ हाथ मलत रह गइलन। |
| (ix) | **गाल बजावल (डिंग मारल)** | - | गाल बजावल हमरा न सोहाय। |
| (x) | **आंख देखावल (डेरावल)** | - | हमरा क कमजोर बूझ के आंख जन देखाव। |
| (xi) | **फुटहा फांकल (गरीबी)** | - | रामफल के सबकुछ लुट गइल अब ऊ फुटहा फांकत फिरऽता। |
| (xii) | **कपारे पड़ल (जिम्मेदारी आइल)** | - | बाप का मुअला पर सऊँसे परिवार उनके कपारे पड़ गाइल। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **(xiii)** | **कपारे हाथ धइल ( फिकिर कइल )** | - | जब बाढ़ आइल त मंत्री जी कपारे हाथ ध लिहलन। |
| **(xiv)** | **जूठन गिरल ( भोजन कइल )** | - | दुआर पर साधु संत के जूठन गिरल नीमन मानल जाला। |
| **(xv)** | **तीन में कि तेरह में ( अधिकार के )** | - | तू बोले वाला के हउअ तीन में कि तेरह में। |

## अभ्यास

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**( क ) नीचे लिखल मुहावरा के दुगो अर्थ देहल बा सही पर चिन्ह लगाई?**

(i) अंगुठा देखावल - (अस्वीकार कइल/अंगुरी देखावल)

(ii) आँख मारल - (ईशारा कइल/आँख से गिरल)

(iii) कान काटल - (मात कइल/चाकू से कान काटल)

(iv) पोल खुलल - (भंडा फुटल/ बिजुरी के पोल खुलल)

(v) पानी-पानी भइल - (लजाइल/ पानी से शरीर भींजल)

(vi) कान दिहल - (ध्यान दिहल / पुकारल)

**2. लघु उत्तरीय प्रश्न**

(i) निचे लिखल मुहावरा से वाक्य बनाई।

पेट फूलल, आंख खुलल, खून खउलल, दांत निपोरल, तलवा चाटल।

**3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

(i) अपने लगे से दस गो नया मुहावरा खोजीं आ ओकरा से वाक्य बनाई ?

(ii) आँख आ कान पर कुछ मुहावरा चयन करीं ?

# पढ़ऽ-गुनऽ

# काहे के झमेल बा

**–मास्टर अजीज**

बता दऽभइया झगरू, ई काहे के झमेल बा।

दूनो ओरी करिया, दूनो ओरी गोर,

दूनी ओरी हँसी, दूनो ओरी लोर।

देखऽ तू खूनवाँ के कइसन ई मेल बा ।। बता दऽ0।।

दूनो के सुरूजवा करेला परिकरमा,

दूनो का अँगना में नाचे चनरमा।

कवनो ना अन्तर, ई बूझला के खेल बा ।। बता दऽ0।।

एके गो अल्लाल बारन, एके गो राम,

केहू परमान करे, केहू करे सलाम।

दूनो का लागल धर्म के नकेल बा ।। बता दऽ0 ।।

कहत 'अजीज' सिर्फ अन्तर बा बानी,

केहू माँगे 'आब', केहू माँगेला 'पानी'।

पूंजी का बजरिया में घक्का ठेलमठेल बा ।। बता दऽ0 ।।

# सभले निमन ठठपाल

**–डॉ० उदयनारायण तिवारी**

ठठपाल के कहनी भोजपुरी–प्रान्त में सभ जगह कहल जाला। एह कहानी के नीचे दीहल जाता–

एगो ठठपाल रहले। जब ऊ पढे गइले त सभ लइका उनका के ठठपाल–ठठपाल कहिके रिगावे लगलन स । ऊ गुरूजी किहाँ गइले आ कहले ''गुरूजी, हमार नाँव बड़ा खराब बा। सभ लोग ठठपाल–ठठपाल कहिके, हमरा के रिगावता। हमार कौनो दोसर नीमन नाँव धदिहल जाव।'' गुरूजी उनकाके समुझाके कहले, ''बबुआ, नाँव त मतारी–बाप पुकारे खातिर राखेला। नीमन–खराब नाँव से का मतलब? काम नीमन होखे के चाहीं । ओहीसे नाँवों नीमन हो जाला ।''

ठठपाल के, गुरूजी के ई बात ना समझ में आइल । ऊ गुरूजी से बारंबार कहे लगले, ''ना गुरूजी, सरकार हमार कौनो नीमन नाँव राखि दीं । लइका रिगाइके मुआ घलले बाड़े स'' । गुरूओजी जब बहुत दिकदिका गइले त कहले, ''अच्छा जा तनी घूम फिरि आवऽ, अउर जे नाम तोहरा रूचे उहे हमराके बतावऽ । हम ऊहे नाँव तोहार राखि देब ।''

ठठपाल अब नाँव का खोज में चलले । गाँव का बहरा देखले जे एगो लइकी खेत में अनाज बीनतिया । पुछले, ''ए बहिन, तोहार नाँव का ह'' । ऊ कहलसि, ''हमार नाँव ह लछिमिनियाँ'' । ठठपाल बड़ा अचरज में पर गइले आ कहले, ''बहिन, ई कइसे हो सकेला । तोहार नाँव ठहरल लछिमिनियाँ आ तूँ बीनऽ अनाज ! ई कइसन बात ?'' तब ऊ ठठपाल से कहलसि, ''भइया, नाँव त मतारी–बाप पुकारे खातिर राखेला । 'लछिमिनियाँ' नाँव रखला से आसमान से रोपेआ थोड़े बरिस जाई ।''

ठठपाल का समुझ में ई बात ना आइल । ऊ आगे चलले । जात–जात देखले कि एगो

हरवाह खेत में निठाह दुपहरिया में हर जोतता । मन में सोंचले कि ई अदिमी बड़ा तकलीफ में बा । जरूर-से-जरूर एकर कौनो खराब नाँव होई । पुछले, ''भाई, तोहार नाँव का ह ?'' हरवहवा कहलस, ''हमार नाँव ह धनपाल'' । ठठपाल फेन अचरज में पर गइले । एकर नाँव धनपाल आ ई जोतता हर ! ई ना हो सके । फेन कहले, ''भाई तूँ हँसी करताड़ऽ का ! तोहार नाँव अइसन सुनर, आ काम अइसन खराब ! ई का बात ह ?'' धनपाल ठठाके हँसले आ कहले, अरे भाई, नाँव त मतारी-बाप पुकारे खातिर राखेला । का तूँ समझताड़ऽ कि 'धनपाल' नाँव रखला से हम कुबेर हो जाईं !''

ठठपाल का समुझ में कुछुओ ना आइल । ऊ कइएक कोस दूर चल गइले । देखले कि सड़क प कुछ लोग राम नाम सत्त करत एक जाना के ले जाताड़न । ठठपाल दऊरके आगे गइले आ पुछले, ''ए भाई, इन्हिकर नाँव का रहल ह ? आ ई कइसे मुअले ह ?'' लोग कहल, ''कइएक बरिस से बेमार रहले ह, इन्हिकर नाँव अमरसिंह रहे । ई सुनके ठठपाल घबड़ा गइले आ कहले, ''भाई जब इन्हिकर नाँव अमरसिंह रहल ह, त मुअले कइसे ?''

लोग अचरज से उनका ओर देखे लागल आ ओह में के एगो अदिमी उनका से कहलन, ''का तूँ नइखऽ जानत कि अदिमी का नाँव से ओकर कौनो संबंध ना रहे । नाँव त मतारी-बाप खाली पुकारे खातिर राखेला ।''

अब ठठपाल का, नाँव का बारे में असली बात मालुम पड़ल, आ ऊ समझ गइले कि अब ढेर घुमला से कवनो फैदा नइखे । ऊ गुरूजी किहाँ लवटि अइले आ कहले–

बिनिया करत लछिमिनियाँ के देखलीं,

हर जोतत धनपाल;

खटिया चढ़ल हम अम्मर देखलीं,

सभले निमन ठठपाल ।

ऊपर के कहनी आज से अढ़ाई हजार बरिस पहिले के 'जातक' का कहनी में भी मिलता। बुद्ध होखे के पहिले गौतम के कइगो जनम भइल रहल । ओह जनमन के कथा 'जातक' में एकट्ठा कइल बाड़ी स । एह कहनिन में आज से अढ़ाई हजार बरिस पहिले के बहुत कहनी आ गइल बाड़ी स । भगवान बुद्ध का गया में ग्यान मिलल रहे, आ ऊ बहुत दिन तक बिहार में घूम के

बौद्ध धरम के परचार कइले । ओह समय के बहुत कहनी 'जातक' में बाड़ी स । ओहमें से ठठपाल के कहनी ऊपर दीहल बा । 'जातक' में एह कहनी के नाँव 'नाम-सिद्ध-जातक' बाटे, आ ठठपाल के नाँव ओह में रट्ठपाल दीहल बा । जइसे भोजपुरी कहनी का अंत में एगो पद बाटे, ओइसहीं 'जातक' का अंत में भी एगो पाली गाथा बा । खोज कइला से आजुओ भोजपुरी प्रदेश में अइसन कहनी मिलिहन स, जवन 'जातक' में होइहें स ।

●

# ऊ कारीगर रहे

## –दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

ऊ सिल्पी रहे –दिल्ली दरबार के प्रधान सिल्पी । सिल्प ही ओकर जीवन, सिल्प ही ओकर आनन्द, सिल्प कला ही धन, परिवार, संसार, सब कुछ रहे ।

उमर ओकर साठ बरिस रहे । दुबर पातर सरीर, कमर झुकल, माँस के कहीं पता ना, सजीव कंकाल मात्र । बाकी ओकर उजरा आँखि में तेज के जोति दमकति रहे । मुँह पर आत्म-विसवास के जीअत जागत प्रभा रहे ।

ऊ दिन भर गगनचुम्बी मचान पर बइठ के, सैकड़न सिल्पी आ हजारन मजदूरन के साथ धूप के धूप, सीत के सीत, आ बरखा के बरखा ना समुझि के–

राज भवन के निमारन में बरिसन बितवले रहे, एही में आपन गौरव आ सन्तोष समझले रहे ।

राति-राति भर जागि के ऊ कला के बारीकी, ,खोदाई, पच्चीकारी, रंगसाजी, नक्कासी, चित्रकारी आदि के चिन्तन क के ओह महल के निरमान में आपन स्वास्थ के साथ-बलि चढ़ा देले रहे, तब कहीं महल तैयार भइल रहे ।

साँझ के फाटक के सामने खड़ा होके अपना कारीगरी के ऊ घंटन तक बड़ा ध्यान से देखलसि । फिर दू बूँद आनन्द के आँसू गिरा के अपना सहायक सिल्पियन के साथ, घर के ओर रवाना भइल । ओकरा पीछे हजारन मजदूर ओकर कुछ हथियार ले ले, चुपचाप ओकरा के घरे पहुँचावे खाती चललनि । घर पहुँचला पर ऊ भरल कंठ से उन्हनि के सम्बोधित करके कहलसि –'जा लोग । भगवान तोहन लोग के सुखी रखिहें । हमनी के गरीब हइजा परिसरम ही हमनी के धरम ह, याद रखिह लोग ।'

काल्ह बादशाह के सवारी नया महल में जाई । नया महल में गृह परवेस होई । हजारन पुरूष-स्त्री सजधज के महल के बाहर भीतर दौड़त रहन । बेगमन, के ऐसआराम के सामान,

बादशाह के आराम गाह खातीर इतर, फुलेल, केसर, कस्तुरी आदि सुगन्ध, फर्सफानूस आदि के सजावट के सामान, गुलाब जल से भरल हम्माम, आम आ खास दरबार के सजावट, सेना के परदरसन- सब के तैयारी में राज करमचारी बेआकुल रहनस ।

खास अफसर साँझ के महल में गइले आ सबके निरीक्षन क के वापस गइलें । परबन्ध सब ठीक रहे । सहर में मुनादी करल दिहल गइल कि नया महल में बादशाह जी काल्हि प्रवेस करिहें आ ओहिजे आम दरबार होई ।

रात के सन्नाटा में, महल के परधान फाटक के सामने चौड़ा सड़क पर खड़ा एक बूढ गरीब अँजोरिया के परकास में महल के सोभा निहारत रहे ।

**( मैटर साफ नहीं है )**

थोड़े देर बाद तीन चार अधेड़ आदमी आहिजा अइले ओह बुढ़ा के बगल में खाड़ हो के ऊ लोग भी महल के देखे लगलें।

सभे चुपे रहे एक आदमी थोड़े देर बाद कहलसि गुरूदेव एतना दिन के परिसरम के फल के ई सौंदर्य रासि के रूप में सामने खड़ा देख के कहतना आनन्द होत बा।

बूढ़ा सिल्पी के धेयान टूटल। ऊ तीनो आदमी के कहलसि, 'तू लोग हब ? कब अइल ? का कहल ह ?''

× × ×

ऊ महल के ओर देखत फाटक में घुसत रहे कि सिपाही आगे बढ़ि के रोकलसि कि भीतर जाये के हुकुम नइखे।

सिल्पी अचरज में पड़ि के पूछलसि, ''केकर हुकुम नइखे ? तू के हव'' ?

सिपाही कहलसि–बादसाह के। हम फौज के एक सिपाही हईं'। सिल्पी कहलसि–''ई घर हमहन के ना बादसाह के ह हम एह में ना जा सकी ? अच्छा!''

ऊ लौट गइल। तेजी से ऊ घर के ओर चलल जात रहे। सिर ओकर नीचे झुकल रहे आ मन ओकर आकास में। आकास पताल के सोचे में बेआकुल रहे।

× × ×

हाथी, रिसाला, फौज फिर राजा महाराजा आ अमीर उमराव के सवारी उनकर चोबदार आ खवस सब एक-एक क के फाटक के भीतर घुस गइले।

**( मैटर मिटा हुआ है, साफ दें )**

बढ़ उत्तर देलसि, ''एहि राज भवन के मुख सिल्पकार। हमहीं एह महल के हजारन सहायकन के साथ बनवले हईं। महल हमार है। बिना हमरा आज्ञा के एह में रवां के जाये वाला हईं''?

× × ×

हजारों भूखल गरीब मजदूर के बची से मुख सिल्पी के ले जाके दू चोबदार सजल दरबार में बादसाह के सामने खड़ा कइलन। चोबदार कहलसि, ''बादशाह के कोरनीस कर।''

सिल्पी चोबदार के देखलसि आ चुप खड़ रहल। बादसाह पुछलन, ''तू ही राज परसाद बनावे वाला मुख सिल्पी हव ?''

सिल्पी विरक्त होक कहलसि–''जी हँ''।

''काल्ह तू ही साही सवारी के आगे बढ़े में बाधा देले रहल ?''

''हाँ ! दोसर के घर में जाये से रोकले रहीं।'' जब साही खजाना से तोहरा के महल बनावे वास्ते खरच आ तोहरा सुल्क मिलल रहे, तब महल तोहार कइसे भइल ?''

''साही खजाना केकर ?''

''परजा के। बाकिर बादसाह ?''

**( मैटर मिटा हुआ है, साफ दें )**

सिल्पी चोबदार के ओर देख के कहलसि, 'तू लोग कह ताड़ कि कोरनीस कर। आपन कृतध्न सेवक के, ओकरा स्वार्थीपन खातिर सलाम करीं ? कबहूँना !''

समूचे दरबार में तरूआरि चमके लागल। बादसाह के एक इसारा के देर रहे, ओर गुस्ताख सिल्पी के सिर धड़ से अलग हो जाइत।

बाकिर बादसाह ओहि तरह सिर नीचा कइले गम्भीर होके बइठल रहन। सिल्पी धीरे-धीरे दरबार से बाहर निकलल। ओकरा के राके के केहू के हिम्मत ना परल।

सब मजदूर जयकार के साथ ओकर स्वागत कइले। दोसर दिन लोग देखले कि नया महल से सब साही सामान निकाल के पुरान महल में जात रहे आ बुढ़ा सिल्पी के अध्यक्षता में एक सिल्प विद्यालय आ कला प्रदर्सनी खोले वास्ते ओह महल में तइयारी होत रहे।

●

# ओका - बोका

**–मास्टर अजीज**

ओका - बोका एगो खेल बा । एह में कुछ लइका गोलाई में बइठल रहे ला । सभे आपन तरहत्थी गोल के ऊपर उठइले रहेला । अंगुरी सब गोर रवानी नीच रहेला । एगो लइका आपन एगो हाथ खाली राखेला । ओही हाथ के अंगुरी से सबके गोल ऊठल हाथ के बारी-बारी से छुए ला आ गीत गावे ला –

ओका-बोका तीन तरोका

लउआ लाठी

चनन काठी

चनना के नाम का ?

गाना के आखिर में जेकरा पर अंगुरी पड़ेला ऊ कहेला – इजई, बिजई पान ले फूलेला एक हाथ खाली राखे बाला लइका उत्तर देवे वाला लइका के हथेली पर मार के ओकरा पुचुका देवेला । गते-गते सभ लइका के हाथ पुचुका दिहल जाला । बारी-बारी से सबई हथेली के चमड़ा पकड़ के पूछल जाला – सूप लेव कि चलनी ।

बच्चा अगर सूप कहता त ओकर चमड़ा पकड़ के खींचत कहल जाला फटकऽ ज, फटकऽ, अगर बच्चा चलनी कहऽ ता, त जे चमड़ा पकड़ले बा ऊ लइका कहऽ ता चालऽ, चालऽ। आखिर में कुल्हि बच्चा एकका ऊपर एक आपन-आपन हथेली राखेला । सब उलट-पुलट के हथेली पर मारेला आउर गावे ला –

अटकन-मटकन दही चटाकन

बर फूले, बरइला फूले

सावन में करइला फूले

सावन गइले चोरी

धर कान मरोरी ।

इहे गीत गावत लड़िकन एक-दूसरा के कान पकड़ले गोल-गोल घूमे ला ।

फेर सभे एक-दूसर के कान पकड़ ले

बइठ जाला आ गोल-गोल झूलत गावेला–

मामा हे। मामा! मामी के गगरिया काहे फोरलऽ हो मामा।

मामी हो मामी! चिऊंटी के झुण्डा छोड़ इहऽ हो मामी।

इहे करत सब हसंत लाता-लूती करत खेल खतम करेला।

●

# मुहर्रम गीत

पच्छिम से जोड़ा तजिया आयो, देखो तजिया लाले लाल

धद तजिया, बार द दियरा, लड़े दूनो भईया

लड़त-लड़त हो दादी, छुटलीं गरमिया

खोल दादी रेशम डोरिया, लागे द बेचरिया

पच्छिम से जोड़ा चउकी जो आयो, देखो चउकी लाले लाल

ध द चउकी, बार द दियारा, लड़े दूनो भईया

लड़त-लड़त हो अम्मा, छुटली गरमिया

खोल द अम्मा रेशम डोरिया लागे द बेचरिया

पच्छिम से जोड़ा सेहला जे आयो, देखो सेहला लाले लाल

ध द सेहला, बार द दियरा, लड़े दूनो भईया

खोल द मामी रेशम डोरिया, लागे द बेचरिया

●

# शब्दकोश

तहरा लोगिन खातिर एगो छोटहन शब्दकोश दिहल गइल बा। एह शब्दकोश में उ शब्द बा, जवन विभिन्न पाठन में आइल बा आ तहरा लोग खातिर नया भी हो सकत बा। कवनो-कवनो शब्द के कइगो अर्थ भी होला। पाठ के संदर्भ से जोड़के तहरा लोग अनुमान लगावऽ कि कवन अर्थ ठीक बा।

इहां देखऽ कि शब्द से पहिले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिहल गइलबा एह संकेतन से हमनी के शब्दन के व्याकरण संबंधी जानकारी मिली। नीचे लिखल सूची के मदद से तहरा लोग अक्षर-संकेतन के समझ सकत बाड़ऽ–

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अ० | – | अव्यय | अ० क्रि० | – | अकर्मक क्रिया |
| क्रि० | – | क्रिया | कि०वि० | – | क्रिया विशेषण |
| पु० | – | पुल्लिंग | मु० | – | मुहाबरा |
| वि० | – | विशेषण | स्त्री० | – | स्त्रीलिंग |
| सं० | – | संज्ञा | स० क्रि० | – | सकर्मक क्रिया |

**(अ)**

**अगाध** (वि०) - देह के सब छोट-बड़ अंग

**अचरवा** (सं०) पु० - साड़ी के एक कोना

**अन्हार** (वि०) - अंधेरा, अंधार

**(आ)**

**आदर्श** (सं०) पु० - नीमन, उपमा योग्य, उ जवना के रूप आ गुण आदि के अनुकरण कइल जाव ।

**आयोजन** (सं०) पुं० - कार्यक्रम, कवनो काम ला पहिले से कइल प्रबंध ।

**(उ)**

**उमर** - (स्त्री.,अ.) आयु, उम्र, अवस्था, पूरा जीवनकाल

**( ऐ )**

**ऐतिहासिक** (वि., सं) - महत्वपूर्ण, इतिहास से संबंधित । जवन इतिहास में होखे

**( क )**

**कर** (पु०, सं०) - हाथ

**कांकर** (स्त्री०, दे०) - पत्थर, कंकड़

**कातिक** (सं०) - हिन्दी वर्ष के एगो महीना

**कुच-कुच** (क्रि०वि०) - गाढ़ा, बहुत (करिया)

**कुटुम्ब** (पु०) - संबंधी, सगा, एक साथ रहे वाला परविार के लोग

**कर्त्तव्य परायणता** (क्रि०वि०) - जिम्मेवारी के निभावल

**कुशाग्रबुद्धि** (वि०) - तेज बुद्धिवाला, कुश के नोक के तरह तीखा

**कलसूप** (सं०) - बाँस के बनल अनाज फटकारेवाल

**( ख )**

**खिसिआइल** (वि०) - क्रोध, गुस्सा

**( ग )**

**गह-गह** (वि०) - खुशी-खुशी

**गाछ** (सं०) - पेड़, पौधा, वृक्ष

**गुमान** (वि०) - घमंड

**गुरु** (वि०) सं० - ज्ञान देबेवाला

**गोविन्द** (सं०) - भगवान, ईश्वर

**( घ )**

**घइला** (सं०) - घड़ा, मिट्टी से बनल एक प्रकार के पानी रखे वाला बर्त्तन।

**घट** (पु०) सं० - घड़ा, घइला, मन भा हृदय

**( च )**

**चारा** (का०) पु० - पशुओं का भोजन, घास डंढल

**चान** (पु०) - चाँद, चन्द्रमा, चंदा मामा

**चिरइआ** (सं०) स्त्री० – चिड़िया, पक्षी

**( ठ )**

**ठावें-ठावं** (पु०) – जगे–जगे

**ठेकुआ** (सं०) पु० – एक प्रकार के घी, आटा से बनल पकवान

**( थ )**

**थियेटर** (अं०) पु० – नाट्यशाला, सिनेमागृह, ऊस्थान जहवाँ नाटक भा फिल्म दिखावल जाला।

**( द )**

**दरिआव** (सं०) – समुद्र

**दोउ** (वि०) – दोनो

**( घ )**

**धूर्त** (वि०) पु० – चलाक, होशियार, चालबाजी से काम लेवेवाला।

**( न )**

**नाव** (सं०) पु० – नाम

**ननद** (सं०) स्त्री० – पति के बहन

**नौनिहाल** (सं०) – बच्चा

**( प )**

**पंडित** (सं०) – विद्वान, ज्ञेयानी

**पवित्र** वि०) – शुद्ध

**परान** (सं०) पु० – प्राण

**पाय** (क्रि०) – प्रणाम, अभिवादन, पाय के एगो अर्थ पांव भी होला।

**पाहन** (सं०) – पत्थर

**पुत** (सं०) पु० – पुत्र, बेटा, लइका, लड़का

**पुलुई** (सं०) – कवनो डाल के अंतिम भाग

**प्रतीक** (सं०) – चिन्ह

**प्रदर्शनी** (सं०) स्त्री० – कवनो चीज के सामूहिक रूप से देखावल, प्रदर्शन कइल

**प्रसारण** (सं०) – कवनो चीज के देखावल, फैलावन, सुनावल

**प्रहार** (सं०) - चोट कइल

**( फ )**

**फर** (सं०) पु० - फल

**फरसा** (सं०) - लोहा के बनल एक प्रकार के हथियार

**( ब )**

**बतकही** (क्रि०) - बातचीत

**बहंगी** (सं०) - समान ढोवेवाला बाँस के बनल उपकरण

**बांग** (सं०) पु० - मुरगा के बोली

**विकाला** (क्रि०) - बेचल जाला, विक्रय कइल जाला

**बेचारिया** (सं० - बयार, एक प्रकार के हवा।

**( भ )**

**भउजाई** (सं०) स्त्री० - बड़ भाई के मेहरारू

**भिुसार** (सं०) - सवेरा, सुबह

**( म )**

**मनका** (सं०) पु० - मन, हृदय

**महत्ता** (वि०) - महत्व, उपयोगिता

**मइया** (सं०) - माई, माँ, माता, मम्मी, मॉम

**मवेशी** (सं०) पु० - पशु, पालतु जानवर

**मातम** (वि०) - शोक, दुःख मनावल

**मिजाज** (सं०) पु० - मन

**मुल्ला** (सं०) - मुसलमान के धर्म गुरू

**मुहर्रम** (सं०) - मुसलमान के एगो त्योहार

**मेहरारू** (सं०) - महिला, पत्नी

**( ल )**

**लजिया** - लाज, शर्म

**( व )**

**वरदान** (सं०) - अनुग्रह

**वांग** (सं०) - मुरगा के बोली

**विहान** (सं०) पु० - सबेरा, भिनुसार, फजीरे

**( श )**

**शान** वि०) - इज्जत

**संतुलित** (वि०) - बराबर

**संस्कार** (सं०) - सुसंस्कृत कइल, व्यक्ति के संवारल।

**सगरो** (सं०) - सब जगह, सर्वत्र

**सद्भाव** (सं०) पु० - आपसी मेल-मिलाप

**सपूत** (सं०) पु० - अच्छा पुत्र, अच्छा बेटा

**समन्वय** (सं०) - मेल-जोल

**सम्प्रदाय** (सं०) - कवनो विशेष धर्म से संबंधित, कवनो विशेष विचार से संबंधित

**साँझ** (सं०) स्त्री० - शाम, संध्या, किरिन डुबे के बेरा।

**सास** (सं०) स्त्री० - मेहरारू के माई

**सुरूज** (सं०) - सुरज, सूर्य

**सिवान** (सं०) - सीमा, कवनो स्थान के अन्तिम छोड़

**( ह )**

**हस्तकरघा** (सं०) पु० - हाथ से कपड़ा बुनेवाला यंत्र

**हृदय** (सं०) पु० - उर, दिल

**होनहार** (वि०) - अच्छा करेवाला